"दिगंबर जैन" पत्रनो वर्ष ८ अंक १०नो वधारो.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

रूपसुंदरी.

प्रकाशक—

मूलचंद किसनदास कापड़िया-सूरत।



"दिगंबर जैन" पत्रनी आठमा वर्षनी

छट्ठी भेट.

दिगंबर जैन ग्रंथमाला-सुरत.

नं. १ कळियुगनी कुळदेवी (गुजराती २०००) ०)०|||

* २ श्रुतपंचमी महात्म्य (गुजराती १०००) ०)=

३ धर्मपरीक्षा (गुजराती ११००) १)

* ४ सुदर्शनशेठ याने नमोकारमंत्रनो प्रभाव(१०००गु.) ०|

५ सुकुमाल चरित्र (गुजराती १०००) ०|=

६ पंचेंद्रिय संवाद (गुजराती १०००) ०)-||

* ७ तमाकुनां दुष्परीणामो (गुजराती १०००) ०)-

८ सामायिक पाठ (संस्कृत--भाषा, विधि, अर्थ, आलोचना पाठ सहित बाळबोध लिपि प्रत १५००) ०)-||

* ९ शीलसुंदरी रास (गुजराती कविता १३००) ०)=

*१० सामायिकभाषा पाठ (सार्थ ११००) ०)-

११ कलियुगकी कुलदेवी (हिंदी १००००) सद्वर्तन

१२ भट्टारक मीमांसा (गुजराती १२०८) ०)=

१३ प्राचीन दि. अर्वाचीन श्वे. (गुजराती ११००) ०)=

१४ पंचकल्याणक पाठ (सार्थ गुजराती २०००) ०)=

*१५ मनोरमा (शीलमहात्म्य गुजराती १३००) ०|=

१६ श्री हनुमान चरित्र (हिंदी २०००) ०|=

१७ श्री जीवंधरस्वामी चरित्र (गुजराती १६००) ०||

१८ शुं ईश्वर जगत्कर्ता छे? (गुजराती २०००) मफत.

१९ जैनसिद्धांतप्रवेशिका (गुजराती १६००) ०|

२० रक्षाबंधन कथा (पूजनसह १५००) ०)-||

२१ पुत्रीको माताका उपदेश (हिंदी १०००) ०)-||

(वधु पाछला पूठां उपर.)

दिगबर जैन ग्रंथमाला नं. ३९.

॥ श्रीवीतरागाय नमः॥

रूपसुंदरी.

कवि दत्तात्रय भीमाजी रणदीवे (वर्धा) ना 'रुपिणी' ग्रंथनो अनुवाद.

अनुवादक--

आशालाल अमुलख शाह—सुरत.

प्रकाशक--

मूलचंद कसनदास कापडिया--सूरत.

प्रथमावृत्ति. वीर सं. २४४१ प्रत २१००.

धरणगाम (खानदेश) निवासी शेठ झूमकसा भगवानसा तरफथी ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयार्थे 'दिगंबर जैन'-ना ग्राहकोने आठमा वर्षनी छठ्ठी भेट.

मूल्य. रु. ०-४-०

प्रस्तावना.

तद्दन अधम दशाए पहोंचेला देशने सुधारवा अने योग्य शिक्षणनुं ज्ञान आपवा सुधारक—गुरुए प्रथम तेमनी दशानुं भान करावी तेना योग्य उपाय पण जणाववा जोईए, जेथी उभय पक्षने पोतानी तेवी अयोग्य स्थिति तरफ अभाव उत्पन्न थाय अने पोते सुधरी शके. दरेक सज्जन पुरुष जनसाधारणने योग्य शिक्षण आपवा दरेक रस्ते उपायो ले छे, परतु तेमांथी जेने जे रुचतुं होय ते प्रमाणे पोताना विचार फेरवी सुधरे अने कोई अधम दशामांज पडी रहे, तो ते बद्दल सुधारक कदिपण दोषपात्र गणाय नहीं घणाए सुधारकोने पोताना मक्कम विचार जणावतां दुःखना सागरमां गोथां खावां पडयां छे. आवां दृष्टांतो हजारो पण नजरे पडशे, परंतु ते वस्तु आपणे आ स्थळे न शोधतां चालु रस्ते वळीशुं.

आ नानी **नवलकथा** श्री **श्रेणिकचरित्र** ग्रंथनो एक कथाभाग छे, जेने वर्धानिवासी **कवि दत्तात्रय भीमाजी रणदिवेए** मराठी भाषामां उपदेशरुपी अने रसीली वार्तारुपे रची थोडाज समयपर "**रुपिणी**" ए नामथी प्रकट करी हती, जेमां **रुपिणी** नामे एक स्त्री केवी कुछंदी हती अने तेने एक महात्मानो उत्तम उपदेश मळवाथी ते केटली बधी सुधरी जई गमे तेवां दुःखो सहन करवां छतां पण अडग हिंमत राखी पोते लीधेलुं शीलव्रत केवीरीते साचवी शकी हती, तेना आबेहब, रसीला, चित्ताकर्षक अने बोधप्रद चीतारनो आ **गुजराती अनुवाद** छे अने '**रुपिणी**' ए नाम गुजराती भाषामां ठीक न लागवाथी एनुं नाम '**रुपसुंदरी**' राख्युं छे; तेमज आवा बोधप्रद अने रसीला ग्रंथनो पुष्कळ फेलावो थाय, माटे **धरणगाम** (खानदेश) निवासी **शेठ झुमकसा भगवानसा** के जेमणे पोतानी हयातिमांज रु. ६००) विद्यादान, शास्त्रदान वगेरे माटे गत् वर्षमां काढ्या हता, तेमना तरफथी ज्ञानावरणीयकर्मना क्षयार्थे '**दिगंबर जैन**' ना ग्राहकोने आठमा वर्षनी **छट्ठी भेट** तरिके प्रकट करीए छीए, जे देवनागरी लिपिमां होवाथी 'दिगंबर जैन'ना बधाज वांचको सुगमताथी लाभ लई शकशे.

वीर सं. २४४१
ज्येष्ठ वदी १४
ता. ११-७-१५

जैन जातिसेवक—
मूलचंद किसनदास कापड़िया—सूरत.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

रुपसुंदरी.

प्रकरण १ लुं.

संकेत अने हालना भट्टाभिक्षुकोनी वृत्ति.



तःकाळना समये सृष्टिसुंदरी, शरीर उपरनी अंधकाररुपी साडी दूर करी, जागृत थई चोतरफ प्रसन्न मुद्राए अवलोकन करती हती. संगीतना शोखीनोए स्वर्गीय संगीतना मधुर मधुर तानथी प्राणीमात्रने तन्मय करी दीधां हतां. हृदयने खुश करनार संगीतथी वृक्षसमुह धीमेधीमे हालता हता अने वायुलहरी मंदमंद वाती हती. उद्योगी मनुष्य पोताना नित्य-कर्ममां लागी जवानी तैयारी करता हता. पक्षीओना कलरव अवाजथी आनंदनो अनुभव करतां सृष्टिसुंदरीनुं अवलोकन करनार विद्वानो-ज्ञानीओना हृदय प्रफुल्लित बनी रह्यां हतां, तेज प्रसंगे राजगृहनगरीमां एक विचित्र घटना बनी रही हती.

"अहाहा! आजे खेरखरुं म्हारुं भाग्य उदयमां आव्युं" एक तरुणे एक तरुणीने अटकावी कह्युं.

"हं, खबरदार म्हारा शरीरने अडक्या तो" तरुणी स्हेज गुस्साना आवेशमां बोली, परंतु ते तरुण एटलो काबेल हतो के तेणीना गुस्सा तरफ दरकार न करतां बोल्योः–

"आवी सोना सरखी आवेली तक हुं जवा दईश एम तने लागे छे? प्यारी, आज केटलाक दिवसथी त्हारो जोग जोई रह्यो हतो अने सोगनपूर्वक कहीश के हजु बीजा केटलाक दिवस त्हारो मेलाप न थयो होत, तो हुं जीवतो रही शकत नही!"

"बस करो आ तमारुं मूर्खपणुं! पारकानी स्त्री साथे आवुं बोलतां शरम पण नथी आवती?" तरुणीए उत्तर आप्यो.

आ प्रसंगे तेणीए गुस्सानुं एवुं बाह्य स्वरुप बताव्युं हतुं के बीजो कोई साधारण लुच्चो तो तुर्तज त्यांथी रवाना थई जात, परंतु आ तरुण–तेवा कामनो काबेल तरुण स्त्री-चरित्रना लक्षणो जाणतो होवाथी न डरतां निडरपणे कहेवा लाग्योः—

"रूपसुंदरी! आवा चाळा करवाथी शो लाभ? त्हारा आ उपरना गुस्साथी हुं ब्ही जईश एम त्हने लागे छे? जो त्हने तेमज लागतुं होय तो ते त्हारी भ्रमणाज छे अने ते त्हारे सत्वर काढी नांखवी जोईए. व्हाली! त्हारी क्रोधीष्ट

भमरीओ उपर न चढावीश. त्हारी आवी वर्तणुकथी म्हारो निश्चय भंग थतो नथी, परंतु मन टूटी जाय छे. त्हारा आ वाक्प्रहारथी म्हारा हृदयनो चूरेचूरो थई जाय छे. परंतु म्हारो प्रेम ! छः, ते लेशमात्र पण भंग थनार नथी अने त्हेनो भंग करवानुं सामर्थ्य त्हारामां तो शुं, परंतु जगत्मांना कोईपण माणसमां नथी. म्हारा शब्दो म्हारा हृदयना ऊंडा प्रदेशमांथी नीकळे छे, आ म्हारा अंतःकरणनी भाषा छे अने म्हारा आ अभंगप्रेमनी साक्षी एटले म्हारी सर्व संपत्ति अने म्हारो देह पण आज त्हने समर्पण करुं छुं. केम ! हजु पण म्हारा प्रेमनी त्हने खातरी थाय छे के नहीं ? हजु पण त्हारो गुस्सो समाय छे के नहीं ? हजु पण हुं त्हारा प्रेमनो पात्र थयो छुं के नहीं ? नहीं ! नहीं ! रुपसुंदरी आज हुं त्हने म्हारा उपर आवी अप्रसन्न रहेवा दईश नहीं. म्हारी आ एकनिष्ट भक्तिथी किंवा पूजाद्रव्यथी म्हारो हृदयदेवता पण प्रसन्न थाय नहीं तो आज में ते पाछळ पोताना प्राणने पण बळी करवानो निश्चय कर्यो छे अने आ जो त्हेनो आरंभ—"

आटलुं बोली त्हेणे पोताना फेंटानो फांसो पोताना गळामां नांख्यो अने हवे ते जोरथी खेंचवानी तैयारीमां छे एटलामां ते तरुणी त्हेना बन्ने हाथ जोरथी पकडी बोलीः—

" सबूर ! सबूर ! देवदत्त, आवुं साहस न करो ! त्हमारा प्रेमनी परीक्षा जोवा माटेज हुं त्हमाराथी क्षणभर आवी

निष्टुरपणाथी वर्तो ! परंतु खरुं पूछो तो प्रथम त्हमने जोया ते दिवसथीज म्हारुं मन त्हमारा पर आकर्षायुं छे, पण आप आ केटला अविचारीपणाना दृष्टांतने सत्य ठरावबा तैयार थाओ छो. अरे, अरे ! पुरुषना साहसिकपणानी हद थएली पण जोई !

आ वखते ते तरुणी, तरुणना मोहना पासमां सपडाई हती. वाचक ! उभय अनाचारी स्त्रीपुरुषने तेवीज स्थितिमां रहेवा दई त्हेमनो पूर्ववृत्तांत शुं छे ते तपासीए.

आ कथा-वार्तानी शरुआत सर्वोत्कृष्ट भूपाल श्रेणिक-राजाना वखतनी होई, उपरना बंन्ने पात्रो त्हेमना राज्यनाज एटले राजगृहनगरीना हतां. स्त्री एक खेडुतनी पत्नी हती. त्हेना पतिनुं नाम बळीभद्र हतुं अने त्हेनुं नाम रुपसुंदरी (रुपिणी) हतुं. तेणी रुपमां अति सुंदर अने त्हेनो च्हेरो पण मोहक हतो. त्हेनामां जेटलुं सौंदर्य हतुं, त्हेना करतां ते विषेनी त्हेनी खंत त्हेने वधारे देदिप्यमान बनावती हती, परंतु त्हेना बाह्य अंग जेटला मनोरम हतां तेटलांज त्हेना अंतरंग मळीन हतां. आ सर्व मलीन अंतरंगने त्हेनुं चंचल मन मददगार हतुं. आवा दुर्गुणथी त्हेनुं आटलुं उत्कृष्ट बाह्य सौंदर्य पण प्रेत उपरना पुष्प प्रमाणे तिरस्कार युक्त थयुं हतुं. आवा सुंदर शरीरमां आ निंद्य दुर्गुणनो केवी रीते प्रादुर्भाव थयो, आ नाजुक फूलना अंतरंगमां पण दारुण विषधारी कीडो केवी रीते पेठो, ए बाबत अत्रे स्फूट करवानी आवश्यकता

नथी, परंतु एटलुं तो कहेवुंज पडशे के, त्हेनी बाल्यावस्थामांनी परिस्थितिज घणे अंशे आ दुर्गुणने कारणभूत थई हती.

त्हेना आवा प्रकारना स्वभावथी गृहकार्य तरफ किंवा गृहिणी कर्तव्य तरफ त्हेणीनुं बिलकुल लक्ष नहोतुं. टापटीप अने नखरा एमांज त्हेणीनो घणोखरो वखत जतो, आथी त्हेणीना संबंधे गाममां अनेक प्रकारनी शंकाओ प्रसरेली हती. दोरंगी दुन्याने शुं ! ज्यां कांई जोवानुं के सांभळवानुं मळ्युं एटले त्हेना उपर रजनुं गज करी वात वधारी, परंतु त्हेनाथी फायदो छे के नुकशान छे ते तरफ बिल्कुल लक्ष राखती नथी. आवी स्थितिमां लोकवाणीना प्रहारथी रुपसुंदरीना सासुससराना मनमां केटली वेदना थती हशे त्हेनी दुन्याने किंवा खुद रुपसुंदरीने पण कल्पना नहोती. गाममां चालेली पोतानी निंदा केटलीक वखत त्हेणीना कानपर पण आवती, परंतु तेथी पोताना चंचळ स्वभावमां फेरफार करवो, एटली पण तेणीना मनमां असर थई नहीं.

लोकनिंदाथी अने सासुससराना उपदेशथी के अन्य कोईपण कारणथी तेणीना मनपर असर थई नहीं, किंवा थती नहीं. तेणीनो पति घणोज सात्विक, सरल स्वभावी अने आखो दिवस काममां गुंथाएलो रहेतो. ते सवार थतांज खेतरमां जतो अने रात्रिनी एक प्रहर वित्या पछीज घेर आवतो, परंतु त्हेने पण सुख किंवा आनंदनो लाभ बिल्कुल मळतो नहोतो.

पोताना स्वभावथी पोते पोताना पतिने दुःखी करे छे अने तेथी उभयना जीवन विषमय बने छे ए विगेरेना ख्यालो ते अभागणी रूपसुंदरीने नहोतां.

आवा प्रकारनी आ तरुणीनी स्थिति होवा छतां खेतरमां जवा माटे ते आज घरमांथी निकळी हती अने रस्तामां उपर जणावी गया, ते प्रमाणेनी हकीकत बनी आवी.

तेणीने जेणे अटकावी हती ते तरुण पण राजगृहनगरी-नोज रहेनार होई, ते एक भिक्षुकनो पुत्र हतो. त्हेनुं नाम जो के देवदत्त हेतुं परंतु त्हेनी वर्तणुंक अने आचरण जोई त्हेने 'दानवदत्त' एज नाम विशेष शोभतुं हतुं, एवुं कोईने पण जणाया सिवाय रहे नहीं ! त्हेनो बाप जो के भिक्षुकनो धंधो करतो हतो, पण त्हेनी आर्थिक स्थिति बदल राजगृह-नगरीना मोटा मोटा लक्ष्मीपुत्रो—धनवानोने पण आश्चर्य लागतुं हतुं अने मोटा मोटा व्यापारीओने रात्रि-दिवस अथाग उथलपाथल करी नफा-नुकसाननी चिंतामां बळवुं पडतुं हतुं. केटलाक व्यापारीओ त्हेनी आर्थिक स्थिति जोई, ' आपणे पण शरुआतथी आवा बीनजोखमी धंधामां केम पडया नहीं ?" एम बोलता हता.

आ गृहस्थना नहीं भिक्षुकना धंधानो व्यवसाय एवा प्रकारनो हतो के, भोळा मनुष्य त्हेनी नजरे पडता के तरतज त्हेमनो शीकार करतो. कोई श्रीमंतनो पुत्र मांदो पडे, कोई

व्यापारी लक्ष्मीनी अगवडमां आवे किंवा कोई आबरुदार माणस उपर राजानी इतराजी थाय तो आ भिक्षुक पोतानी मोसम समजी ते वखते संकटमां सपडायला मनुष्य पासे जइ, एकाद ग्रहनी पीडा छे अगर गामदेवतानो कोप छे एम मिथ्या वातोथी ह्मेमना मनमां व्हेम बेसाडी देतो अने पछीथी पोतानी इच्छा मुजब ह्मेमनी पासेथी द्रव्य कढावतो. आवा अनेक व्यवसायथी ते घणीज संपत्ति प्राप्त करी शक्यो हतो.

खेडुतवर्गने पण आ ब्राह्मण कामधेनु जेवो लागतो. वळी ह्मेना गरीब स्वभावनुं पूछवुंज नहीं! साधारण धूर्तपणुं राख्युं एटले थयुं, पछी जोईए ह्मेने पीगळावी पोतानुं कार्य साधी शकाय. आ भिक्षुक पण धूर्तपणानुं पुतळुंज होवाथी ते जुदा जुदा रस्ते खेडुतवर्गने स्हमजावी–पटावी ह्मेमनी पासेना द्रव्यनुं हरण केवी रीते करतो ते जुदुं कहेवानी जरुर नथी.

वळी ते भिक्षुके–धूर्ते लोककल्याण माटे गामदेवतानो अभिषेक! करवानुं धतींग एटला सपाटाथी चलाव्युं हतुं के जेथी खरी व्हेती नदीनो प्रवाह बंध थई अभिषेकना जळनी एक कृत्रिम नदी व्हेवा लागी हती. आ अनर्थ बद्दल एक वखत ह्मेना पुत्रे पण आश्चर्यथी खुलासो मांग्यो हतो, त्यारे ते गुस्साना आवेशमां बोल्यो:—

"मूर्ख, त्हने बिल्कुल अक्कल नथी. आ नदीना प्रवाहनी उलटपालटथीज द्रव्यनी उलटपालट थई छे, समज्यो; ते प्रवाह

आ तरफ वळ्यो तेथीज लोकोना द्रव्यनो प्रवाह पण म्हारा घर तरफ वळ्यो ! आ अखंड वहेनार अभिषेक-जळनो प्रवाह एटले त्हने शुं समजाय छे ? आ आपणा घरमां वहेनारो द्रव्यनो प्रवाह छे प्रवाह ! समज्यो !" पिताना आ उत्तरथी पुत्र एकदम ठंडो थई जाय एमां शुं आश्चर्य !

आवा धूर्तविद्यामां निपुण ते भिक्षुकना घेर देवदत्तनो जन्म थाय, त्यारे उद्योग प्रत्ये त्हेने तीरस्कार उत्पन्न थाय त्हेमां शुं आश्चर्य ? सिवाय त्हेना पितानो उपदेश पण त्हेनी आ वृत्तिने पुष्टी आपे तेवो हतो. ते, देवदत्तने हमेशां कहेतो:-

" आपणे कोईपण धंधो करीने शुं करवुं छे ? आपणी वंशपरंपरानो व्यवसाय आपणने युक्तिपुरःसर करतां आवड्यो एटले बस ! अने आ युक्ति प्राप्त करवाने 'हाजी हा' पणुं अने घणीज धूर्तता, ए सिवाय बीजुं कांईज नथी. पछी आपणने शानी खामी छे ? यजमाननी बधी संपत्ति ते खुशीथी आपणी समज. म्हारो आ उपदेश बराबर ध्यानमां राखी चालीश, तो त्हारा जन्मांत सुधी कशानी पण कमी पडशे नहीं ! "

थयुं ! आ प्रमाणे न्हानपणथी आळसु अने निरुद्योगी बनेलो देवदत्त-तरुण शरुआतथीज स्वच्छंदी अने बदफेलीमां सपडाय एमां शुं आश्चर्य ? अने ते हवे पूर्णपणे दुर्व्यसनमां सपडायो हतो. आ सिवाय लोकनिंदा अने ठठ्ठामश्करी पण तेना अंगनो एक स्वभावज थई पडयो हतो. केटलाक

समये ह्हेनो पिता मरण पाम्यो अने ह्हेनी अढळक लक्ष्मी वगर महेनते आवी मळवाथी ह्हेनी आ नीच वृत्तिने पुष्टिकर थई पडी अने ते संपत्ति पण दुर्मार्गे जवा लागी. व्याजबीज छे के गरीब भोळा मनुष्योनी देखती आंखमां धूळ नांखी मेळवेली लक्ष्मी आवा दुर्मार्गे न जाय, तो जाय पण कया रस्ते ?

आ नीच तरुणने पुष्कळ दिवसथी रुपसुंदरीनो मोह लाग्यो हतो. ह्हेणीना स्वभाव वगेरेनी जो के ह्हेने माहीति नहोती किंवा तेणीनी अने ह्हेनी ओळख पण थई नहोती, तो-पण ह्हेनी वर्तणुक अने मननुं चंचळपणुं देखाडनार ह्हेणीनो अभिनय, एटलुं बाह्य कारणज ह्हेने तेज विषयमां दुर्वासना उत्पन्न थवानुं सबल कारण हतुं; परंतु ह्हेणीनो कादिपण एकांतमां मेलाप न थवाथी ह्हेणे पोतानी आ वासना तेणी पासे आज सुधी खुल्लो रीते कही बतावी नहोती ! ते मेलाप ह्हेना सुदैवे (!) ह्हेने अचानक आज प्राप्त थयो ! ते पण कोई काम परत्वे आज आवीज रीते पोताना खेतरमां जतो हतो.

रुपसुंदरीनो पोशाक दररोज प्रमाणे आज पण भभक-दार हतो. ह्हेणीए एक काळी चंद्रकळा धारण करी, जरीनी बुट्टेदार चोळी पहेरी हती अने अष्टमीना चंद्र जेवा पोताना ललाटमां कंकुनी एक नानी टीलडी करी हती. आ वखतनो ह्हेनो पोशाक अने चटकमटक एमांथी एकज तरफ जो कोईनी

नजर पडे तो आ खेतरमां जती खेडुतनी स्त्री छे एम केटला पण परिश्रमथी कहीए तोपण कोईने खरुं लागे नहीं !

देवदत्तनो पोशाक पण त्हेनी वृत्तिने बंधबेसतो हतो. त्हेणे शरीरे एक मलमलनुं पहेरण पहेर्युं हतुं, माथे आसमानी रंगनो फेंटो घणीज महेनते फेशनथी बांध्यो हतो अने हाथमां एक नानी नेतरनी सोटी पण हती.

स्हामे नेत्रकटाक्ष फेंकती मोटा तोरथी चालती रुपसुंदरीने दूरथी जोतांज एकाद गीध पक्षी जेम प्रेत–मुडदा तरफ धसे तेज प्रमाणे देवदत्त तेणी तरफ चाल्यो अने पछीनी तेमनी वातचीत अने संवाद शुं शुं थयो ते उपर जणावी गया छीए.

पोते बनावेली युक्तिना–आत्मघातना ढोंगथी, दुर्बळ किंवा चंचळ मननी रुपसुंदरीपर अनुकुळ परिणाम थयेलुं जोतांज देवदत्ते, प्राप्त थयेला मेलापनो जेटलो बनी शके तेटलो लाभ लेवानो निश्चय कर्यो.

त्हेणे पोताना मोहक बोलथी तेणीना मनमां विश्वास उत्पन्न करावी, भावी सुखना अनेक मनोहर चित्रो तेणीना समक्ष खडां करी तेणी पासेथी पोतानी साथे देशांतर न्हासी जवानुं कबुल करावी लीधुं !

आ वखते पोतानुं केटलुं अधःपतन थाय छे, ते ते दुर्बळ मननी प्रेमदाना लक्षमां आव्युं नहीं ! तेणीनो पण

शुं दोष ? ते नीच तरुणे तेणीनी आ पांगळी मानसिक वृत्तिनो पोतानी दुर्वासना तरफ बनी शके तेटलो उपयोग करवामां पोतानुं पुरुषार्थ वापर्युं हतुं.

त्हेना मोहक भाषणथी आकर्षायली रुपसुंदरी बोली:–" त्यारे आवती काले बे प्रहर रात्रिए हुं अहींआ जरुर आवुं ने ! त्हमे म्हारी अहीं राह जोशो के ?"

"हा, त्हने हजु पण आ बाबत केम शंका लागे छे ?" तेणीना उपरना प्रश्नना केवल आनंदथी घेलो थई देवदत्त बोल्यो.

आ वखते खरा स्वर्गनां द्वार जाणे खुल्लां थयां होय तेम त्हेने भास्युं. ते आगळ बोल्यो:–"छः तुं केवी गांडी छे ? ते क्षण आपणे मळी, स्वर्गसुखमां विहार करवानो ते समय आवतां सुधी, जेने खरा अग्निना अंगारा पर लोटता प्रमाणे लागनार त्हेने, त्हारा माटे गांडोघेलो बनेला दासने "म्हारी अहीं राह जोशो के ?" एम तुं शुं पूछे छे ? मालमत्ता वेची पैसा एकठा करवानुं न होत, तो हुं अत्यारथीज अहीं बेसी रह्यो होत."

एटलामां रुपसुंदरीनुं मन शंकाशील थयुं अने ते बोली:–"हुं तमारा शब्दो पर विश्वास राखी, कह्या प्रमाणे वर्त्तवा तैयार थई, परंतु आप म्हने पछीथी फसावशो तो नहीं ? म्हारो त्याग तो नहीं करोने ?"

"केवी आ कुशंका !" देवदत्ते पूर्ण विश्वासु दृष्टिए कह्युं. "व्हाली, म्हारा प्रेम बद्दल त्हारा मनमां हजु पण संशय

रह्यो ? बोल ! त्हारो आ संशय नष्ट थवा माटे हुं अत्यारेज शुं करुं ते बोल ! म्हारा आ हृदयने विदीर्ण करी त्हेमां त्हारा बद्दल वसतो गाढ प्रेम त्हने शुं देखाडुं ?"

"नहीं, नहीं !" त्हेना आ नाटकी भाषणथी निःशंक थयेली रूपसुंदरी बोली-"म्हारा घेला मनमां विचित्र शंका उत्पन्न थई ! पण हवे, म्हने मुक्त करो, कारणके खेतरमां जल्दी जवुं जोईए नहीं तो आपणो सघळो विचार धूळधाणी थई जशे !"

तेणीना मधुर भाषणथी अने चंद्रमुखीना जेवा मुख-मंडळनो त्याग करवो देवदत्तने आ वखते घणोज विषम लाग्यो, परंतु पछीनुं अखंड अने अविनाशी सुख (!) तरफ विचार करतां, त्हेणे ठरावेलो वखत थतां सुधी छूटी करी तेणीना वियोगनुं दुःख सहन करवानो निश्चय कर्यो अने तेणीने पोतानी बाथमांथी मुक्त करी. मात्र छोडती वखते पोतानुं वचन पाळवानुं फरीथी एकवार याद करावी, सोगनपूर्वक कबूल करावी लीधुं ! अने पछीथी बन्ने जण पोतपोताना रस्ते पड्या !



प्रकरण २ जुं.

सत्समागम.



देवदत्त साथे संकेत करी रुपसुंदरी पोताना खेतरमां जवा नीकळी, जे पहेला प्रकरणमां जणाववामां आव्युं छे. घेरथी न्हासी जई, स्वतंत्र रहेवाथी घणुंज सुख मळे छे एवुं तेना हृदयमां ठसी गयेलुं होवाथी देवदत्त साथे न्हासी जवानो तेणीए पाको विचार कर्यो हतो. आ भावी सुखमां लवलीन थई ते चालती हती, तेवामां रस्तानी एक बाजुए पण नजीकमां शीलापर बेठेला एक तरुण मुनि उपर तेणीनी नजर पडी.

आ मुनिनी उमर हजु पचीस वर्षनी पण थई नथी छतां आटली वयमां वैराग्य प्राप्त करी सकळ विषयसुखोपभोगनो त्याग करवो, ए कांई स्हेलुं नथी. आ वये जे मनोविकार वर्षो सुधी जळवृष्टि प्रमाणे कोईने पण न गणकारतां कनककामिनी-विलास पाछळ दोडवानुं, तेमां मग्न करनारुं—नहीं, उलटी गति आपनारुं—परमार्थ तरफ वाळनार आ महात्माना आत्मबळनुं वर्णन करवानी शक्ति कोनी कलममां छे?

आटली वयमां वैराग्य प्राप्त थवो, ए कदाच पूर्वजन्मना शुभकर्म कारणभूत हशे, परंतु ते प्रमाणे तरवारनी धार जेवां व्रतनुं पालन करवुं, तेमां अलौकिक पुरुषार्थ नथी एवुं कोण कहेशे?

आ वखते प्रातःकाळना आठ वाग्यानो सुमार हतो. सृष्टिनुं स्वरुप हजु पण सौम्य अने रमणीय हतुं अने मुनिश्वर तेनुं अवलोकन करी ते उपरथी मळनारा अनेक विचारतरंगमां मग्न थई गया हता. ते अति स्वरुपवान होवा उपरांत तपथी तेमनी कांति वधारेज खीली नीकली हती. तेमनी मुखमुद्रा अति शांत होवा छतां तेमां एटलुं मोहकपणुं हतुं के जोनारने तेमनी तरफ भक्तिभाव प्रकटी नीकळतो.

ते महात्माने जोई रुपसुंदरीने एकदम मोह उत्पन्न थयो अने पोतानो मार्ग छोडी ते तरफ वळी.

ते तेमना समक्ष उभी रह्याने घणोज वखत थवा छतां पण मुनिना म्होंमांथी एक शब्द पण नीकळ्यो नहीं. ' मुनि मने कोण, क्यांना वगेरे प्रश्न पूछशे एटले पछी हुं मारी मनोकल्पना तेमने जणावीश ' एवो रुपसुंदरीना मनमां विचार हतो, परन्तु मुनि तो पोताना ध्यानमां मग्न होवाथी तेणीना तरफ नजर पण करी नहीं, जेथी घणोज वखत राह जोया पछी कंटाळी जई पोतेज मुनि साथे बोलवा लागी–

' महाराज ! केटला वखतथी हुं आपनी समक्ष उभी रही छुं, छतां पण आप मारी साथे एक अक्षर सुद्धां बोलता नथी ! केमवारु, हुं आपनी कृपाने पात्र नथी शुं ? महाराज ! जेनी प्राप्ति माटे सेंकडो तरुण पोताना सर्वस्व उपर पाणी फेरववा तैयार छे, ते पोतानी मेळे तमारी पासे आव्या छतां

तमे तेनी तरफ नजर सुद्धां पण करता नथी ! म्हारा सुखनी वात एक बाजुए रहेवा द्यो, परंतु पोताना सुखनी बाबतमां तमे आटला बधा बेफिकर केम ? तमने पोताने कांईपण नहीं सूज्युं होय, पण आवी नानी वयमां आटली सुंदर अने सुकोमळ तमारी देह, टाढ, तडकामां दुःखी थयेली जोई म्हारा हृदयमां कांई कांई थाय छे ! महाराज, आवी तरुणावस्थामां आ मिथ्या (!) फंदमां फसाई आपना जीवना आवा हाल केम करो छो ? तमारो मनमोहक चेहेरो अने सुंदर रुप जोई मारा जेवी सेंकडो स्त्रीओ रात्रिदिवस आपनी सेवामां हाजर रहेशे. तमने मुखमांथी एक अक्षर पण काढवानी जरुर रहेशे नहीं, पछी महाराज, आम शा माटे करवुं पडे ? हं: हवे मौनव्रत छोडो अने आ दासीने पावन करो ! ! केम, आप हजु पण कांई बोलताज नथी ? नहीं नहीं, हवे हुं आपने छोडवानी नथी' एटलुं बोली ते पतीत प्रेमदाए ते निष्पापी मुनिवर्यनो हाथ झाल्यो.

आटला वखत सुधी तेनी वाचाळ चालु हती परन्तु मुनि तो स्वस्थज बेठा हता, पण ज्यारे तेणीए तेमना हाथने स्पर्श कर्यो के 'पतीत भगिनी आ शुं करे छे ?' एवा उद्गार ते शांत, निर्विकार अने निष्कलंक महात्माना मुखमांथी बहार पडया.

आटलाज उद्गार, परन्तु तेनुं ते पतीत प्रेमदा उपर केवुं विलक्षण परिणाम थयुं ! तेणीए तरतज तेमनो हाथ छोडी

दीधो अने बधो नहीं, तोपण ते उद्गारथी तेनो कामवेग घणोज कमी थई गयो. पुरुषना भाषणनो किंवा स्पर्शनो विलक्षण अनुभव रुपसुंदरीने आ जन्ममां कदि पण थयो नहोतो; तथापि 'दोरडी बळे पण वळ बळतो नथी' ए कहेवत मुजब ते तेमने कहेवा लागी:-

'महाराज, मारी आटली पण कामना केम पूरी नथी करता ? आप जो म्हारो हेतु पार नहीं पाडशो, तो हुं झुरीझुरीने आपनी समक्ष मरीश. मारुं मन आपनी उपर एटलुं लाग्युं छे के आपना सिवाय म्हने जो स्वर्ग पग मळे, तो ते नर्क जेवुं गणी काढुं !"

"सुख ! सुख ! सुख ! हे अभागिणी !" ते शांतचित्त मुनि मोटा गंभीरपणाथी बोल्या "तुं केवा गाढ अज्ञानतिमिरमां डूबेली छे अने तारुं सुखलोलुप मन, विकारवशमां पडी केवा मिथ्या सुखनी आशा राखे छे ? सुखनी इच्छा दरेक प्राणीने होय छे अने ते प्रमाणे तने पण होय ते साहजीक छे, परंतु सुख बाबतमां तारी समजुत मात्र भूल छे. खरुं सुख अने तारी ते विषेनी समजुतमां पाणी अने अग्नि, किंवा रात्रि अने दिवसना प्रमाणे विरोध अगर अंतर छे. तुं सुख समजी जेना पाछळ लागी छे अने स्वेच्छाथी जेनो अनुभव ले छे, ते विषयभोग खरेखरुं साचुं सुख छे के ? ज्यारे तेम होय तो सुख बाबत तने जे चटपट लागी रहेली छे ते केम? सुख मळवा

पछी तेनी इच्छा केम थाय? आ उपरथी तुं म्होटा भ्रममां पडी छे, ए त्हारा लक्षमां नथी आवतुं? तारी साथे बोलवा बाबतमां एकलो भ्रम नहीं परन्तु दारुण अधःपात छे! इंद्रियवेदना समाववाना प्रयत्नमां विकृत मनने क्षणिक मळनारा आनंदमां सुख समजी, तुं आ केवुं भयंकर विषपान करे छे, तेनी कल्पना पण छे के? आ कार्यथी त्हारा आत्मानी केवी भयंकर स्थिति थशे, केवां दुःखो भोगववां पडशे, तेनो त्हें कदिपण विचार कर्यो छे? कदि तेवो विचार आवे तो ते तरफ दुर्लक्ष करे छे? व्यभिचारी जीवने परलोकमां भोगववानी भयंकर आपत्तिओनी कल्पना पण नथी शुं? केम, आ बधुं तने खोटुं लागे छे? सांभळ, आ विषयमां त्हने कांईपण शंका मालूम पडती होय अने ते त्हारे जोवुं होय तो क्षणभर त्हारी आंखो बंध करी स्थिर मनथी रहे, अने पछी त्हने शुं देखाय छे ते कहे!"

रुपसुंदरीनुं मन ते महात्माना भाषणथी एटलुं स्थिर थई गयुं हतुं हतुं के, ते वखते मनने स्थिर करवानी जरुर रही नहोती. तेणी ए महात्माना कह्या मुजब आंखो बंध करी थोडी वार उभी रही तेटलामांज तेणीए एक बूम पाडी अने 'महाराज! म्हने बचावो, बचावो' एम कही तेमना पग उपर ढळी पडी.

रुपसुंदरीने जीवंतपणामांज आ वखते जे नर्कनो भयानक देखाव देखायो, तेमां ते महात्मानुं अलौकिक सामर्थ्य

हतुं के रुपसुंदरीनी कल्पना हती ते निश्चिंतपणे कहेवुं अशक्य छे. व्यभिचारी जीवने नर्कमां केवी भयंकर शिक्षा मळे छे, आ विषयनी वातो हमेशां तेणीना कान उपर पडती होवाथी तत्संबंधी विचार पण तेना मनमां घोळाता हता, आथी मुनिना भाषण पछेलांज दृढ श्रद्धाळु बनेला मनने तेज विचारनुं काल्पनिक चित्र, जेवुं ने तेवुंज मूर्तिमंत देखाय, ते वात कदाचित् अधिक संभवित हशे. ते गमे ते हो परन्तु एटली वात तो खरी के, ते देखायलो भयानक देखाव तेणीने एटलो खरो लाग्यो अने तेणीना मनपर एवुं सखत परिणाम थयुं के, ते स्थिति आपणे प्रत्यक्ष भोगवीए छीए एवी तेणीना मननी समजण थईने, तेणीए उपर कह्या मुजब मोटी बूम पाडी !

नर्क केवा प्रकारनुं होय छे अने तेमां आवा पातकी जीवोने केवा प्रकारनुं शासन मळे छे, आ बाबतनी घणी वातो जुदा जुदा धर्मग्रंथोमांथी वांचकोना कानपर हमेशां आववाथी, रुपसुंदरीने आ क्षणभरना काल्पनिक नर्कवासमां केवां केवां दारुण दुःखो भोगव्यानुं अनुभव्युं ते अहिं सविस्तर कहेवानी जरुर नथी.

मुनिना पग उपर ढळी पडेली रुपसुंदरी घणाज वखते शुद्धिमां आवी, तेणीना हृदयमां थयेली धडक हजु पण कमी थई नहोती, हजु पण तेणीना काळजामां ते जोरथी होवा छतां आखुं शरीर परसेवाथी भींजायलुं हतुं! पोते जोयेलो ते भयानक देखाव अने भोगवेली दारुण शिक्षाओ, ए सर्व खरुं छे एम हजु

सुधी ते मानती हती. ते जरा शांत थई एटले मुनिराज बोलवा लाग्याः--

" रुपसुंदरी ! आ निंद्य दुर्गुणथी आपणने परलोकमां शुं शासन मळशे ते त्हें जोयुंज. मरण पछीनुं नर्क तने देखायुं, पण आ निंद्य कृत्यथी आलोकमांज जे नर्क निर्माण थयुं छे ते तरफ त्हारी नजर कदि पण गई छे ? आ नर्क, ते नर्क करतां कोई पण प्रकारे कमी भंयकर, कमी दुःसह किंवा कमी यातनावह नथी ! आटलुंज नहीं पण केटलीक बाबतमां आ तेनां करतां वधारे भयंकर छे ! परलोकना नर्कमां त्हारा पाप बद्दल त्हने स्वतःनेज दुःख भोगववुं पडशे, पण आलोकना नर्कमां त्हारी साथे त्हारा प्रियजनो अने संबंध धरावनारा दरेकने असह्य दुःख भोगववुं पडे छे; रुपसुंदरी, आनो--आ ऐहिक नर्कनो--आ जीवंतपणाना रौरव विषे त्हें कदि पण विचार कर्यो छे ? आ पापथी त्हारुं मन प्रत्येक क्षणे केवुं शंकाशील होय छे, अनेक प्रकारना भय प्रत्येक क्षणे त्हारुं हृदय केवी रीते फाडे छे, जुदा जुदा प्रसंगे नवीन नवीन युक्तिओ योजवामां अने केवी थाप आपवी एज विचारे अशांतता त्हारी पाछळ केवी एकसरखी लागी छे अने सुखनी निद्राथी तने केवी छोडावी छे, तेनो बरोबर विचार कर ! आ मनना दुःखनुं चित्र आंखो समक्ष खडुं कर अने आ यातनानी, भावी नर्कनी साथे तुलना करी आ एटलीज असह्य छे के

नहीं ते कहे ! अहींना मनने दुभावो अने त्यांनी तपावेली लोखंडी पुतळी करतां कोई पण प्रकारे कमी छे ? तपावेला तेलनी कढाईमां तळातां थती त्यांनी कंपारी अने अशांतिना कारणे अहीं थनारी त्हारा जीवनी चटपटमां कांई भेद छे ? अने त्यां भालो, बरछी, सोया वगेरे तीव्र शस्त्रनुं शरीरमां भोंकावुं अने प्रत्येक पाप प्रसंगे 'आपणे आ निंद्य कर्म करीए छीए ' एवा प्रकारनी सदसद्विवेक बुद्धिना–तीव्र तरवारना अहीं त्हारा हृदय उपर थनारा असह्य घाव, तेमां तुं शुं फरक समजे छे ?

आ सर्व दुःख–यातना, रुपसुंदरी तुं हंमेश अनुभवे छे छतां ' आपणे सुखोपभोगोज अनुभवीए छीए ' एवुं त्हने लागे छे शुं ? केटलो त्हारो भ्रम ! पीतां मीठुं लागवाथीज, तुं आ अत्यंत दारुण परिणामी विष, अमृत समजी प्राशन करे छे, पण तेनुं माठुं परिणाम त्हारा उपरज थई थोभतुं नथी; त्हारा बरोबर त्हारी साथे जेनो जेनो संबंध छे, त्हेना हृदयने ते अघोर यातना आपे छे, ते विषे त्हें विचार कर्यो छे शुं? आपणने सुख थाय ए आशाथी जेणे मोटा आनंदथी त्हारुं पाणीग्रहण-लग्न कर्युं तथा जेनी साथे कोईपण प्रकारनी जुदाई राखीश नहीं एवुं त्हें लग्नप्रसंगे वचन आप्युं, ते त्हारा पतिनी–ते त्हारा देहना अधिपतिनी त्हारा आ बेइमानी वर्तनथी केवी स्थिती थती हशे ! हजारो धगधगता अग्निना अंगारा उपर

धरेला प्रमाणे रहेना अंतःकरणमां केवी वेदना थती हशे, तेनुं चित्र तुं पोताना समक्ष रजु कर. "

आ वखते रुपसुंदरीनी आंखोमांथी अश्रुधारा वहेती हती, पण मुनिराजे ते तरफ लक्ष न आपतां पोतानो वाक्-प्रवाह तेवीज रीते चालु राख्यो.

" पापिणी " ते बोल्या. " पोतानुं घर साक्षात् नर्क बनावनारी आ घोर विषयवासना सुखकारक छे एवुं त्हने केवी रीते लागे छे ? केवुं अघोर कर्म ! खरी रीते हिंसा, जुठ, चोरी, विश्वासघात, वचनभंग, ए दारुण पातकोनुं मूळ आ व्यभिचार नथी शुं ? अने जगत्मां अशांततानुं मूळ आ सिवाय बीजुं कयुं छे ? चारित्रभ्रष्ट, बोल ! आ अशांतताना कारणमां, आ दुर्गतिना मूळमां, आ मनस्तापना बीजमां, आ गृहिणीपदना कलंकमां, आ उभय कुळना मूळ उपर फराई जनार काजळमां, आ पति विषेना बेइमानीपणामां, आ अखिल पातकनी राशीमां, आ निःशेष अनर्थना पगमां, आ परम-निंद्य व्यभिचारमां तुं सुख समजे छे शुं ? जो, त्हारा आ वर्तनथी असह्य मनोयातना थई, केवळ मरणनीज राह जोई बेठेला त्हारा सासु-ससरा अने मरणथी पण आ वेदना कमी थवानी आशा वगरनो ते त्हारो पति—"

मुनिनुं आ बोलवुं पुरुं थयुं नहीं तेटलामांज ते दुर्दैवी स्त्री " बस ! बस ! महाराज ! " एम कहेती एकदम उठी

अने तेमना पग उपर अविरत अश्रुजळना प्रवाहनो अभिषेक करवा लागी ! आ वखते तेणीनो कंठ एकदम भराई आवेलो होवाथी कांई पण बोलायुं नहीं, तथापि ते तूटता गद्गद कंठे बोली:—

" महाराज, आ पापिणीने पोताना करेलां कर्मनो अत्यंत पश्चाताप हवे थाय छे अने आपनी कृपाथी एकदम साफ थयेली म्हारी दृष्टिथी म्हारुं स्वरूप अत्यंत मलीन देखाय छे ! महाराज, कहो आ रुपसुंदरीना–नहि पापिणीना उद्धारनो कोई रस्तो ! नर्कमां डूबेला आ कीडाने उपर आववानी कांई आशा छे शुं ? कहो, कहो ! महाराज, म्हारा हृदयने आ वखते कांइ कांई थई रह्युं छे !

" रुपसुंदरी, शांत था " मुनि अत्यंत गंभीरताथी बोल्या, " त्हने जो पोताना कृतकर्मोनो खरेखरो पश्चाताप थतो हशे अने हवे पछी आ पापथी अलिप्त रहेवानो जो त्हारो खरोज निश्चय थयो हशे तो त्हारा उद्धारनी हजु पण आशा छे अने ते मार्ग हुं त्हने बतावुं छुं. "

" अहाहा ! महाराज, आ चांडाळणी प्रत्ये पण आपनी आटली अनुकंपा ! खचित साधुवर्य, आप साक्षात् इश्वररूप छो " एक दीर्घ निश्वास मूकी रुपसुंदरी बोली. " एक विष-धर प्राणी समान सर्व जगत् जेनो तिरस्कार करे छे अने महा-

रोग प्रमाणे समजी सद्‌गुणी लोक जेना पडछायामां पण उभा रहेता नथी, ते आ कर्मचांडाळणीनी आपने आटली दया आवे छे ? ते कुमार्गगामिनी प्रत्ये अमृत वरसाववा आप तैयार थया छो ? आ पतीतनो उद्धार आप करशोने ? अहाहा ! केटलुं आपनुं दयालुपणुं ! महाराज, त्यारे कहो, आ पतीतना उद्धारनो मार्ग क्यो छे ते कृपा करी बतावशो. "

"शील" मुनिना म्होंमांथी आटलोज शब्द नीकळ्यो.

"पण महाराज, दुष्ट मनोविकारना अपूर्व वेगने रोकवामां अने कामदेवनी असीम वेदनाने विफळ करवामां आ अबळा समर्थ थशे ?"

"रुपसुंदरी ! निश्चय ने अशक्य शुं छे ? त्हने ज्हेनो भय लागे छे ते मनोविकारने जीतनारा अने कामदेवने तुच्छ गणनारा महात्मा पण कोण हता ? त्हारा सरखा माणस नहोता शुं ? बीजी वात बाजुए रही, परंतु राजुळमती पण अबळा हतीने ? त्हेणे तुं कहे छे ते मनोविकारना अटूट प्रवाहने केवी रीते रोक्यो ? अने कामदेवनी असह्य वेदनाने निर्वीर्य करी; पछी तुंज त्हेनाथी आटली केम व्हीए छे ? पीशाच प्रमाणे ते हमेशां त्हेनुं चिंतवन करनारनी पाछळ लागे छे ए ध्यानमां राख. तुं मर्द बनी त्हेने दूर फेंकी दे के ते त्हारी तरफ नजर सुद्धां पण करशे नहीं. याद राख के ते केवळ निर्बळ छे, त्हेमने छे ते स्थितिमां मुकवा अगर त्हेना भयंकर सर्प बनाववा ते

केवळ त्हारा मनोबळपर अने शीलरक्षणना निश्चयपर अवलंबी रहेलुं छे. जो आ बन्ने निश्चय दृढ हशे तो त्हेना तरफथी कांइ पण त्हने अडचण थशे नहीं अने ते एटला दृढ राखवानुं सामर्थ्य त्हारामां शुं पण प्रत्येक माणसना आत्मामां छे."

"त्यारे महाराज, म्हारे पतिनो त्याग करवो पडशे शुं ?"

"नहीं, रुपसुंदरी ! त्हारे आ व्रत पाळवा पति त्यागवानी जरुर नथी. संसारविरक्त साधु-साध्वीनेज पत्नि पति संबंधीनो त्याग करवानी आवश्यकता छे, परंतु शीलव्रतनी बाबतमां संसारी जीवोने आ कडक नियम लागु नथी. संसारी जीवोने स्वस्त्री-पुरुषमांज संतोष मानवो, एज शीलव्रत छे. त्यारे रुपसुंदरी, जो त्हारे असह्य दुःखना स्थान जेवा नर्कमांथी हजु पण नीकळवानी इच्छा होय तो आज वखते ते व्रत ग्रहण कर अने मरण पर्यंत निश्चयथी पाळ."

रुपसुंदरीनो निश्चय क्यारनो थई गयो हतो, फक्त ते त्हेमना आशीर्वादात्मक प्रोत्साह माटेज कांई थोडो वखत थोभी हती. त्हेमनुं बोलवुं बंध थतांज तेणीए उभा रही त्हेमना पग उपर हाथ टेक्यो अने बोली:—

"भो ! परम करुणामय साधुवर्य ! आपना आ परम-वंद्य, परमनिर्मळ अने पतीतजनसंरक्षक चरणपर हाथ मूकी अरज करुं छुं के-हवे पछी आ रुपसुंदरी, केवो पण प्रसंग आवे,

केटली पण दुर्दशा थाय, केटली पण भयंकर विपत्ति पडे, तो-पण पति सिवाय अन्य कोईपण परपुरुषनो स्पर्श तो शुं, पापदृष्टिथी जोशे पण नहीं! संकटोनी परिसीमा थाय, मनो-विकारना उछूंखलपणानुं अस्तित्व थाय, आ देहने जीवतो बाळवामां आवे किंवा राई राई जेटला टुकडा करवामां आवे, तोपण रुपसुंदरी मरतां सुधी आ व्रत बिल्कुल मुकशे नहीं! हुं आ प्रतिज्ञा आज वखते आज चरणने स्मरणीने करुं छुं."

आ वखते ते साधुवर्यनी प्रशांत मुद्रा उपर प्रसन्नतानी किंचित छटा उभराई आव्या सिवाय रही नहीं.

रुपसुंदरीथी आगळ बोलायुं नहीं! तणीनो कंठ बंध थई गयो अने नेत्रामांथी अश्रुधारा वहेवा लागी. ते महात्माना चरण उपर पोतानुं मस्तक फरीथी एकवार मुकी ते त्यांथी मोटा दुःखे निकळी.

लीधेलां व्रत त्हेणे केवी रीते पाळ्यां, ते हवे पछी समजाशे. रस्ते जतां ते मन साथे कहेवा लागी—

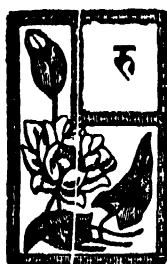
" आज सुधी केटलाक पुरुषोनो स्पर्श आ देहने थयो, पण मारुं सर्वस्व रुपांतर करनार एवो आ स्पर्श पहेलोज. परीस्पर्श कहेवाय छे ते शुं आज?"



प्रकरण ३ जुं.



रुपसुंदरीनो अडग निश्चय.



पसुंदरीना पतिने आजे पोतानी पत्निनो कांई जुदोज अनुभव आववा लाग्यो. तेणीना बोलवा-चालवा वगेरे एकंदर वृत्तिमां पडेलो फरक त्हेने आश्चर्य करतो !' परंतु दैव ! आ सघळुं क्षणभंगुर तो नथी ' एवो विचार पण त्हेना मनमां आव्या सिवाय रह्यो नहीं. आ भ्रांति खाटी छे एम त्हेने थोडाज समय पछी जणायुं.

ते दिवसे सायंकाळे दंपति-युगल मोटा आनंदथी घर तरफ वळ्युं. आजना जेवो आनंद अने आजना जेवुं समाधान ते बन्नेने जन्मांते पण अनुभववामां आवेलुं नहोतुं. सृष्टिनुं स्वरुप पण आज त्हेमने अति रमणीय अने सुखप्रद भासतुं हतुं, आज पोताना हृदय उपरनां केवां दुःखो कमी थयां हतां ते रुपसुंदरीने स्हमजातुं नहोतुं ! तथापि पोतानुं मन आज घणुंज उल्लासित अने हलकुं थयुं छे एटलुं खास तेणीने लागतुं हतुं. पतिनी प्रसन्न मुद्रा जोईने पण तेणीने केटलुंक समाधान थतुं हतुं. आ शुद्ध सुखनो अनुभव तेणीने नवोज हतो !

पोताना पुत्र अने पुत्रवधूमां आटलुं ऐक्य थयेलुं जोई सासु-ससराने पण अत्यंत आनंद थयो. वृद्धावस्थामां त्हेमनी आ इच्छा सिवाय बीजी कई आकांक्षा होय ?

रात्रे पोताना पतिना चरण दबावतां पतिसेवानुं आ मंगलाचरण तेणीए आजथीज सुमुहूर्ते शरु कर्युं हतुं–तेणीए ते महात्माना थएलां दर्शन, त्हेमणे पीवडावेलो दिव्य उपदेशामृत अने तेथी पोताने थयेलो पश्चाताप, ए विषयनी इत्थंभूत हकिकत पोताना पतिने निवेदन करी. आ वखते ते साधु विषे रुपसुंदरीना पतिने केवी पूज्यबुद्धि उत्पन्न थई हशे त्हेनी मात्र कल्पनाज करी लेवी. हशे ! हवे आपणे खरा शुद्ध प्रेमामृतनो आजेज आस्वाद लेनारा आ युगलना सुखमां खलेल न पहोंचाडतां रुपसुंदरी माटे मॅड (गांडोघेलो) बनेला देवदत्तनी शुं स्थिति थई ते तपासीए.

रुपसुंदरीनो अने त्हेनो, कोईपण देशांतरे नीकळी जवानो निश्चय थतांज ते खेतरमां जवा निकळ्यो, एम पहेला प्रकरणमां जणावी गया छीए, परंतु ते ते प्रमाणे खेतरमां गयो नहीं– त्हेनुं मन ते तरफ जवा बिल्कुल लाग्युं नहीं. ठरेला ठराव प्रमाणे सर्वेनी व्यवस्था करी, तेणीनी मार्गप्रतिक्षा करवा माटे धारेला स्थळे क्यारे जई बेसुं एमज त्हेने लाग्युं. आथी खेतरमां जवानो विचार मांडी वाळी अधवचमांज घर तरफ वळ्यो.

घेर आवी सघळी चीजो, आवे ते किंमते वेचवानो आरंभ कर्यो. वेचवानुं आवुं धोरण राखवाथी कोई पण वस्तुनो ग्राहक मेळववामां किंवा तेनुं वेचाण थई रोकडी किंमत एकठी करावमां केटली वार लागे ? हां हां कहेतां त्हेनी सर्व स्थावर जंगम मिलकतनुं वेचाण थई, त्हेनी पासे रोकडी रकम एकठी थई गई. त्हेना आ कृत्यथी घणाखराने आश्चर्य लाग्युं ! त्हेना स्नेहीओने पण त्हेनी वस्तुओनी आवी रीते लूंट थती जोई अतिशय खेद थतो! परंतु स्वतः मालिकज ज्यारे पोतानी वस्तुनो आवी रीते फेंकी देवा जेवो उपयोग करे छे तो त्हेमां खेद थाय तोपण शुं वळवानुं हतुं ? वचमां कोई पण माणसनी त्हेने पूछवानी हिंमत चाली नहीं, परंतु त्हेनी स्त्रीएज पूछवानुं साहस कर्युं त्यारे तेनुं परिणाम ए आव्युं के तेणीना शरीर उपर रही गयेला दागीना पण उतारी तेनुं वेचाण करी नांख्युं. आ खरे बिचारीने पहेरेला कपडेज पियर जवानो वखत आव्यो!

आ प्रमाणे पाणीना मूल्ये सर्व सामाननुं सत्यानाश वाळी, एकठी थयेली रकम बरोबर साथे लई, देवदत्त सायंकाळ पहेलांज ठरावेला स्थळे जइ पहोंच्यो. हवे ठरेलो वखत क्यारे आवे छे अने रुपसुंदरीनी मुलाकात क्यारे थाय छे तेम थवा लाग्युं. त्हेनी उत्कंठा वृद्धिगत थती गई, एकेक पळ एकेक वर्ष जेटली लागवा मांडी. अत्यारे घणीज रात्रि थयेली होवाथी, ज्या त्यां काळो अंधकार प्रसरेलो हतो, जेथी त्हेनी तीव्र आकांक्षा

वधी गई. कांईक अवाज आवे के रुपसुंदरी आवी एम व्हेने लागतुं, परंतु तरतज तेने खाली अवाजनी खात्री थती त्यारे चोतरफ प्रसरेला काळा अंधकार करतां पण वधारे भयंकर एवी निराशा व्हेना हृदयमां पथराई जती.

आखरे ठरेलो वखत वीती गया छतां पण रुपसुंदरी आवी नहीं, एवी ज्यारे व्हेनी खात्री थई त्यारे व्हेनुं मन घणुंज अस्वस्थ थयुं. परंतु करे शुं ! ते केम आवी नहीं ते बाबत व्हेनुं मन अनेक प्रकारना तर्कवितर्क करवा लाग्युं, परंतु तेमांथी अमुकज खरूं एम ठरावषा ते फावी शकतो नहीं. व्हेणे पोतानो ठरावेलो ठराव फेरवेलो होवो जोईए, ए वात व्हेने बिल्कुल संभवनीय लागती नहीं. व्हेने हजु सुधी लाग मळ्यो नहीं होय, तेथी तेणीने आववानुं बन्युं नहीं होय, एज व्हेने व्याजबी लागतुं हतुं, तथापि न जाणे लाग मळतांज तेणी हजुपण आवशे एवा प्रकारनी आशा मनमां राखी ते दिवस उगतां सुधी तेणीनी राह जोतो बेसी रह्यो, परंतु व्यर्थ. खुल्ली रीते अजवाळुं थवा छतां पण रुपसुंदरी आवी नहीं. सूर्यनां किरणोए पृथ्वीपरना सर्व अंधकारनो नाश कर्यो, तोपण व्हेना अंतःकरणमां निराशानो गाढ अंधकार जेवोने तेवोज कायम हतो.

थयेली निराशाथी देवदत्तनुं चित्त भ्रमित थई गयुं ! हवे शुं करवुं ते बिल्कुल समजातुं नहीं. कोई भयंकर विष पीवामां आव्युं होय तेम व्हेना जीवनी स्थिति थवा लागी.

आखरे खरुं शुं छे ते तेणीना समक्ष जई पूछवुं एवो ह्हेणे निश्चय कर्यो, परंतु दिवसे गाममां जवाय तेम न होवाथी आखो दिवस जंगलमांज गाळवो पडयो. आवा अनर्थकारी नरपशु तो जंगलमांज रहे तेज उत्तम छे, कारण तेथी घणा अनर्थ थता अटके.

जरा रात्रि पडतांज देवदत्त त्यांथी जे निकळ्यो ते एकदम रुपसुंदरीना घर पासे आव्यो अने अंधारी रात्रि होवाथी तेमज घरमां कोई न जणायाथी एकदम अंदर पेसी तुर्त एक ओरडीमां छुपाई गयो. खरी रीते आ एक घणुंज अधम साहस कहेवाय ! परंतु "कामातुराणां न भयं न लज्जा" ए प्रसिद्ध कहेवत प्रमाणे आवा माणस खरेखर दुःखमय समये पण निर्भय माने छे, तेओने प्राण जवानी व्हीक पण रहेती नथी ए केवुं कामवासनानुं प्राबल्य ! अस्तु !!

देवदत्त जे ओरडीमां छुपाई रह्यो हतो ते रुपसुंदरीने सुवानीज ओरडी हती. ते त्यां जई बेठो के तरतज रुपसुंदरी पथारीनी व्यवस्था करवा हाथमां दीवो लई त्यां आवी. हजु तेणीनो पति खेतरमांथी आव्यो नहोतो. त्यां देवदत्तने आवा रुपमां एकदम जोतांज मोटेथी बूम पाडे ते पहेलां तो ह्हेणे (देवदत्ते) नाक उपर आंगळी मूकी तेणीने चुप रहेवा इशारत करी.

"ओ देव !" रुपसुंदरी मनमांने मनमां बोली. जे कर्मथी व्हीए छीए तेज आगळ आवे छे, हवे हुं करुं पण

शुं ? आ कहे छे तेम छानीमानी बेसुं के शोरबकोर करी त्हेने अहींथी न्हसाडी मूकवानो प्रयत्न करुं ? करुं पण शुं ?" परंतु तेणीने आथी पण वधारे विचार करवा अने कोईपण निश्चय पर आव्या पहेलांज देवदत्त एकदम आगळ आवी बोल्योः—

" रुपसुंदरी सबुर, गरबड करीश नहीं. म्हारे त्हारी साथे बे-फकत बेज शब्द बोलवाना छे, तेनो सरळ उत्तर त्हारी पासेथी मळशे एटले हुं अहींथी गुपचुप चालतो थईश. त्हारे बिल्कुल डरीवानुं कारण नथी, परंतु जो तुं वचमांज गरबड करीश किंवा म्हारा प्रश्ननो सरळ उत्तर आपीश नहीं तो त्हेनुं परिणाम बहुज भयंकर आवशे ए नक्की समजजे. "

" बोल " रुपसुंदरीना मुखमांथी फक्त एटलोज शब्द बहार पडयो, तेणीना हृदयमां एकसरखी धडक चालु हती, ते जाणे के नर्कना रस्तेथी मात्र पोतानुं मन पापीना मोहक भाषणथी फरी त्यांज वाळवाने किंवा आवो प्रकार न बने, तोपण अत्यारे त्हेनी साथे एकांतमां छीए ते वात पोताना पतिने अने सासुससराने जणावी तेमना मनमां फरीथी निष्कारण दुःख वहेवा लागे एवी बीजी धास्ती तेणीने लागती हती, परंतु तेणीनी ते धास्तीनी ते नीच नरने शुं परवा हती ? ते मोटा दांभिक वचने बोल्योः—

" कबूल कर्या प्रमाणे परमदिवसे रात्रे ठरावेला स्थळे केम न आवी ? "

" म्हें ते नर्कनो रस्तो तेज क्षणे छोड्यो. "

" एटले ? "

" म्हें तेज वखते एक परमपूज्य साधु पासेथी शीलव्रत लीधुं. "

" हुं त्हारुं बोलवुं समज्यो नहीं. "

" बराबर सांभळ त्यारे. " रुपसुंदरी जरा हिंमत राखी बोलवा लागी. " ते वखते दुर्वासनाना नर्कमां तणाती आ पापिणी न्हासी जवा माटे त्हारा विचारने संमत थई, परंतु पछीथी म्हारा पूर्वपुन्ये तुरतज म्हने एक साधु, साधु केवा साक्षात् इश्वरज मळ्या अने पापसमुद्रमां गोथा खाती आ अभागीणीनी त्हेमने दया आववाथी त्हेमणे पोताना उपदेशरुपी हाथथी म्हने बचावी. तेज क्षणे आवा पापमां फरी न पडवानुं, पति सिवाय अन्य कोई पण पुरुष साथे केवळ पापदृष्टिए पण न जोवानुं म्हें व्रत लीधुं, अने ते प्रमाणे गमे ते थाय तोपण आ जन्ममां ए प्रमाणे वर्तवा म्हारो निश्चय छे. "

"रुपसुंदरी, त्हारी आ बधो गपसप खरी मानुं एवो हुं मूर्ख छुं एम तुं माने छे ?" ते अधम बोल्यो. "सिवाय हवे तुं गमे तेवा पतिव्रतना ढोंग करीश तोपण दुनिया ते शुं खरुं माननार छे ! बाकी त्हें परपुरुष तरफ न जोवानो नियम कूतरीने हाडकां तरफ, गीधने मुडदां तरफ अने माखीने मळ तरफ न जोवानो नियम लेवा जेवोज छे."

"देवदत्त" त्हेना आ पाजीपणाना भाषणथी रुपसुंदरी जरा गुस्साथी बोली–"म्हारुं भाषण किंवा वर्तन तुं अथवा एकंदर जगत् खरुं मानो के खोटुं मानो, ए जोवानी म्हने जरुर नथी–हुं तेनी परवा पण करती नथी. म्हारा मनथी हुं निष्पाप देखाई एटले बस ! अधम ! म्हारा जेवा गीध, माखी के कुत्ता तो शुं पण त्हारा जेवा सदैव उकरडा फूंकता रहेनारा लंबकर्ण पण ते महात्माना दर्शनथी पोतानो स्वभाव तद्दन विसरी जाय !"

तेणी घणीज कळकळती अने गंभीरपणाथी बोलती हती, तोपण त्हेना मनपर त्हेनी बिल्कुल असर थई नहीं. उल्टी तेणी पोतानी मश्करीज करे छे एम त्हेने लागतुं हतुं. त्हेणीनुं बोलवुं बंध थतांज ते बोल्योः—

"हवे आवो विनोद करवो बंध कर" एटलुं बोलीनेज ते थोभ्यो नहीं, के तरतज तेणीनो हाथ पकडवा त्हेणे पोतानो हाथ लंबाव्यो. हाथ लंबावतांज "हं ! खबरदार नीच, म्हारा शरीरने हाथ लगावीश तो !" एवा उद्गार रुपसुंदरीना म्होमांथी बहार पड्या. आ वखते ते कोई विफरायली वाघण प्रमाणे देखाती हती अने तेणीनो अवाज पण एटलो तेजस्वीवाळो हतो के आटलो पाजी देवदत्त पण तेणीनो स्पर्श करवानी हिंमत चलावी शक्यो नहीं. ते दूरथीज तेणी प्रत्ये बोल्योः—

"त्यारे पछी तुं जे बोले छे ते मश्करी नथी शुं ?"

"बिल्कुल नहीं !" फक्त शीलनुं अभेद्य कवच धारण करेली ते ललनाए उत्तर आप्यो.

" परंतु त्हें म्हने जे वचन आप्युं छे त्हेनुं शुं ? "

" तेनो शुं विचार होय ! ते पोताना विचारमांथी मुद्दल काढी नांखवो एटले थयुं. नीच कार्य बाबत अजाणपणाथी आपेलुं वचन ते कार्यनुं हलकापणुं जणाई आव्या पछी पाळवुं एटलेज महत् पाप गणाय, ए वात तुं हवे बिल्कुल वीसरी जा ! "

" हा; तेम पण करीश, परंतु फक्त एक शर्त उपर " देवदत्त घणाज शांतपणे बोल्यो.

" ते कई शर्त ? " रुपसुंदरीए उत्सुकताथी पूछ्युं.

" त्हारा मधुर प्रेमनो म्हने एकवार पण स्वाद मळे तेज. "

" हं ! आवा अभद्र शब्द फरीथी म्हारी पास बोलीश पण नहीं. त्हारा जेवा नीच माणसने हवे पछी म्हारा दर्शन पण नहीं थाय ते खूब ध्यानमां राखजे ! "

" रुपसुंदरी ! आवी कठोर बनीश नहीं ! " त्हेना हृदयना प्रेमनी नहीं, पण दयानी भावना जागृत करवाने पण पोतानो इष्ट हेतु पार पडे छे के नहीं ते जोवाना उद्देशे ते गळगळो थई बोल्यो. " त्हारा सिवाय म्हारी शी स्थिति थई छे त्हेनी कल्पना पण त्हने नहीं होय, परन्तु हुं खचित कहुं छुं के आ बे दिवसमां जमण अने निद्रानी पण म्हने खबर नथी, अने हजु पण तुं पोतानी हठ जो आवीज राखीश तो एक तरुणनी हत्यानुं पाप निःसंशय त्हारा उपर बेसशे. त्हें शील-

व्रत लीधुं छे तो भले ग्रहण कर, ल्हेनी आडे आववानी म्हारी बिल्कुल इच्छा नथी, पण फक्त एकज वखत म्हारी इच्छा—" ल्हेना आ लंपटपणा माटे रुपसुंदरीने वधारेज तिरस्कार थवाथी ते ल्हेनुं बोलवुं पण पुरुं न थवा देतां वचमांज बोली:—

"देवदत्त, त्हने जे कहेवानुं हतुं ते म्हें पहेलांथीज स्पष्ट रीते कही दीधेलुं होवाथी तुं फरी पोतानी तेज नफफटपणानी बडबड चलावी रह्यो छे, तेने शुं कहीए! त्हने हवे म्हारे छेवटनुं एकज कहेवुं एज छे के, तुं फरीथी एक अक्षर पण न बोळतां अहींथी चालतो था."

"ओ भूमि उपरनी अप्सरा! आ दीन दासने आवी रीते दूर करीश नहीं" खुशामतना मात्र थोडा शब्दोथी तेणीना उपर असर थाय छे के नहीं ते जोवा माटे बोल्यो. "रुपसुंदरी! रुपसुंदरी!! त्हारा सौंदर्यथी रतिने पण लजावनारी सुस्वरुपी रुपसुंदरी! अगाउथीज वांकी बनेली त्हारी भमरीओ हजु पण वधारे वांकी करीश नहीं! अने अष्टमीना चंद्र जेवा त्हारा मनोहर ललाटपर विशोभित हवे वधारे पसरावीश नहीं! खचीत नील कमळनुं सौंदर्य हरण करनारा त्हारा आ रमणीय नेत्रने आ हृदयभेदक करनारा तीव्रतर कटाक्ष अने कमळगर्भ जेवा नाजुक देहने आ प्रस्तरतुल्य निष्टुर हृदय बिल्कुल शोभतुं नथी! तेज प्रमाणे निरंतर अमृतरस वहेवडावनार त्हारा ओष्ठ ते त्हारी काळकूटस्वरुप वाणीथी

बहार आववा देवाथी केवा नाखुश छे ते तरफ थोडुं पण लक्ष आप. सुंदरी, अन्नछत्र राखनार दातार, काळे करी कृपण किंवा दरिद्री बने, तोपण त्हेनी वर्तणुंक माखीओने पण उडवा न देवी एटले सुधी जाय, ए तो अशक्यज छे. हे म्हारा हृदय-निवासीनी देवी ! हुं त्हने, पोतानुं सर्वस्व अर्पण करुं छुं. आज सुधी कोई पण भक्त पोताना आराधक देवताने शणगारेला नहीं होय, एवा प्रकारना सुवर्ण रत्नालंकारेज हुं त्हने शणगारीश, एटलुंज नहीं पण त्हारी प्रसन्नता माटे हुं पोताना प्राणनी बळी पण आपीश !" कोण जाणे त्हेनुं आ बोलवुं क्यां सुधी चालत, परंतु रुपसुंदरीने तो ते एकदम असह्य थवाथी ते मोटा गुस्साना आवेशमां आवी जई त्हेने कहेवा लागीः—

देवदत्त ! अहींथी चालतो था ! एक क्षण पण म्हारी समक्ष उभो रहीश नहीं ! नीच, त्हारा लंपटपणाथी, खुशामतथी, द्रव्यथी के दरदागीनानी लालचथी अगर पाजीपणाथी हुं फरीन ते दुर्मार्गमां पडीश एम शुं त्हने लागे छे ? हवे **आ रुपसुंदरीने दुनियानी सर्व संपत्ति पोताना पातिव्रत्य-रुपी हीरा आगळ काच प्रमाणे देखाय छे !** अने पातिव्रत्यनो हीरो हरण करवा एटले जगतना बधा हीरा–माणेकना ढग, जो कोईपण त्हेनी आगळ करे, तोपण त्हेने लात मारी फेंकी दईश!"

आ वखते रुपसुंदरी पोताना विचारमां एटली तन्मय बनी हती के, पोतानी समक्ष खरेखर कोईए रत्नो ढगलो कर्यो छे एम तेणीने लाग्युं; '**लात मारी फेंकी दईश**' ए वाक्य उच्चारती वखते खरेज जोरथी हाथ पसार्यो ! पण ते कोईपण

रत्नना ढगलाने न लागतां, दुर्गुणरुपी कोलसानी राशीने—देवदत्तनेज मात्र लाग्यो ! पोताना बोलवा पछी तेणीए ह्नेने जे उपमा आपी हती तेने अनुसरी अभिनय करवोज जरुर समजायाथी ते तेणी समक्ष टेकीने बेठो हतो ते हजु सुधी तेवोज हतो ! परंतु तेणीनो हाथ लागतांज ते एकदम खळभळी उठयो अने गुस्साना आवेशमां उभो थई बोल्योः—

" अरे ! हलकट स्त्री !! ह्हारी आटली वखत आजीजी करवा छतां ह्हने दया न आवी ? म्हारा घरबारनुं सत्यानाश करावनार अने सर्वस्व उपर पाणी फेरवावी, छेवटे म्हारी आवी निर्भत्सना करे छे ? अरेरे ! स्त्रीओनी जात खरेखर महा दुष्ट ! महा अधम ! महा पाजी ! महा बेईमान—! "

" चुप ! नीच पुरुष ! " रुपसुंदरी अतिशय क्रोधिष्टपणे वचमां बोली—"म्हारा जेवी एकाद पापी स्त्रीना वर्तनथी सर्व रीते सर्व स्त्रीजाति उपर आवो निंद्य दोषारोप करीश नहीं ! म्हारा जेवी जे पातकी स्त्रीओ छे, तेमनी तरफदारी करवानी म्हारी इच्छा नथी, तथापि ह्हने हुं खात्रीपूर्वक कहुं छुं के, तेओ पैकी प्रत्येक स्त्रीना पापवृत्तिना मूळमां कोई पण पुरुष मालूम पडशेज ! खचित पुरुषवर्ग स्त्रीओ बाबत खरा पवित्र भाव हृदयमां धारण करशे, तो पाप ए शब्दज स्त्रीवर्गमांथी जडशे नहीं ! खरेखर ते महात्माना हजारमा भागनो पण एक सद्गुणी पुरुष म्हने प्रथमथीज मळ्यो होत, तो हुं दुर्विचारना खाडामां आवी डूबी न होत ! "

"बस ! बस ! रुपसुंदरी त्हारुं आ ब्रह्मज्ञान सांभळवा माटे हुं अहीं आव्यो नथी किंवा पुरुषवर्ग पापी के स्त्रीवर्ग पापी, आ वाद माटे म्हारे कांई करवानुं नथी. आ वखते हुं त्हारा प्रेमथी गांडोघेलो थयो छुं, म्हने म्हारा जीवनी पण परवा नथी, एटले तुं खुशीथी जो म्हारु कहेवुं मान्य करीश, तो हुं म्हारा सामर्थ्यना जोरपर आज-पोताना इच्छित हेतु माटे वेर लीधा सिवाय रहीश नहीं !"

"जारे मुडदाल" रुपसुंदरी आवेशथी बोली. "त्हारुं तो शुं, पण त्हारा जेवा जगत्ना एकंदर नीच पुरुषना एकत्र सामर्थ्यथी पण हवे आ रुपसुंदरी भ्रष्ट थनार नथी ! तुं म्हारा शरीरने आंगळी पण लगाव के तुरतज तुं नहीं के हुं नहीं, एम बे पैकी कोई पण तेज क्षणे गतप्राण थयेला नजरे पडशे !" आ बोलतां तेणीनुं सर्वांग थरथर कांपतुं हतुं, तेणीनी आंखो अंगारा प्रमाणे लाल थई हती !

देवदत्त, पाजीपणामां एटलो निपुण हतो, पण तेणीनी आ घोर प्रतिज्ञा सांभळतांज त्हेनुं धैर्य डगमग्युं, त्हेना मनमां हवे अनेक विरुद्ध विचार घोळावा लाग्या, पोताना हेतुनी सिद्धि माटे प्रस्तुत परिस्थिति एकदम प्रतिकुळ छे एम त्हेने जणावा लाग्युं ! सिवाय तेणीना पतिने पण तेज क्षणे आववानी व्हीक थती हती ! आखरे आगळ पाछळनो पूरी रीते विचार करी, ते बहार नीकळ्यो अने मात्र "हुं म्हारो हेतु पार पाड्या सिवाय कदि-पण रहेनार नथी " एवी धमकी तेणीने आपवा चुक्यो नहीं !



प्रकरण ४ थुं.

रुपसुंदरी असह्य आपत्तिमां.



दत्त, रुपसुंदरीने धमकी: आपी गया पछी ह्हेनो अने तेणींनो फरीथी मेळाप थयो नहोतो किंवा ह्हेनुं शुं थयुं, ते पण तेणीने समजायुं नहोतुं, मात्र ते धमकी दई गया पछी तेणी उपर एक चमत्कारी प्रसंग आवी पडयो.

रुपसुंदरीना पतिनो एक एवो नित्यक्रम हतो के, प्रहर रात्रि वीत्या पछीज खेतरमांथी घेर आववुं अने प्रातःकाळे कुकडो बोलतांज ते खेतरमां जतो. ह्हेनी स्त्रीनी वर्तणुक सुधर्यो छतां पण ह्हेनो आ निश्चय कदि पण चुक्यो नहोतो. ह्हेने हवे घेर आववामां घणोज उमंग अने आनंद मालूम पडतो हतो.

घोर अंधकार होय के वर्षादनां झापटां शरु होय, ते कशानी पण परवा न करतां मोटी उत्कंठाथी ते घर तरफ आवतो हतो.

घोर अंधारी रात्रिए फक्त ह्हेनी रमणीना उवज्ळ थयेला मुखनी स्मृति ह्हेने दीपक प्रमाणे मार्गदर्शक थती अने घेर

आव्या पछी पण तेणीना सस्मित मूखमांथी नीकळता भाषणथी ह्हेनो सर्व श्रम कमी थई जतो. ह्हेने पोतानुं घर स्वर्ग भासवा मांडयुं ! रमणी ! आ केवुं ह्हारुं सामर्थ्य ?

रात्रे प्रियपतिना सहवाससुखमां निर्गमन करी पाछो स्हवारे नवी उमेदथी व उल्हासथी जागृत थई खेतरमां जवुं, एवो ह्हेनो नित्यक्रम हतो.

आ नियम प्रमाणे ते एक दिवस स्हवारे मरघो बोलतांज जागृत थयो अने खेतर तरफ जवा निकळ्यो. जती वखते पोतानी स्त्रीने जागृत करी जतो हतो, ते प्रमाणे आजपण ह्हेणे तेणीने जगाडी. जागृत थतांज तेणी ह्हेनी साथे बहार आवी, परंतु त्यां आवतांज पोतानो पति दररोजना नियम करतां आज बहु जल्दी खेतरमां जाय छे एम तेणीने जणायुं. आवी अपरात्रिए बहार जवुं सारुं नथी, एम लागवाथी तेणीने ह्हेणं कह्युं- ' आ अपरात्रि नथी परंतु स्हवार छे, कूकडो बोल्यो हतो जेथी व्हीवानुं कारण नर्थी .'

" मुओ मरघो ! बोल्यो पण हशे ! ह्हेने शुं ? " ह्हेना बोलवाथी संतुष्ट न थतां रुपसुंदरी बोली. " क्यारे पण बोले ! पंखीने कांई अक्कल होय छे ? "

" तुं गांडी छे ! " तेणीनो पति बोल्यो. " पंखीओने कोईकोई बाबतमां मनुष्य करतां पण वधारे अक्कल होय छे,

समजी ! अने तेमांथी कूकडा पण स्हवार थया सिवाय कदि पण बोले नहीं ? ”

“ वारु, आप कहो छो तेम हशे, परंतु म्हारा मनने थोडी कमकमी लागे छे, तेथी जरा मोडुं केम न जवाय ! एकाद दिवस मोडुं थाय तो थाय; परंतु हं ! अत्यारे तो नथीज जवुं, उं........! ” पतिना गळामां हाथ नांखी म्हों पासे म्हों लावी रुपसुंदरी मोटा लाडपणाथी बोली.

“आज त्हें आ केवी विचित्र हठ लीधी छे ?” तेणीनो पति बोल्यो. “हुं जो रोजना नियम प्रमाणे जल्दी जाउं नहीं, तो सघळा कामनो केवो घोंटाळो थई जाय, ए त्हने समजातुं नथी के शुं ? हुं आव्यो नथी एम जोई मजुरवर्ग बळदने चरावना न जतां सूई जशे अने भूख्या पेटे मुंगा प्राणीने रखडावशे. आटली एकज वात लक्षमां ले, तोपण बसज छे ”

“ वारु, त्यारे हुं पण आपना माटेज कहेती हती ” एटलुं बोली तेणीए त्हेना गळानी बाथ छोडी दीधी.

आ वखते पत्निना प्रेमाळ शब्द तोडीने जवामां त्हेने पण खोटुं लाग्युं, परतु ते कर्तव्यपरायण खेडुत हतो !

पति गया पछी रुपसुंदरी फरीथी पोतानी ओरडीमां आवी सुई गई, परंतु तेणीने फरीथी ऊंघ आवी नहि एटलामांज

तेज ओरडीनुं बारणुं खखड्युं. बारणुं खखडतांज ते जागृत थई अने जुए छे तो पोताना पतिने समक्ष उभो थयेलो जोयो. आटलुं कहेवा छतां पण सांभळ्युं नहीं अने हवे पोतानी मेळेज पाछा आववानुं केम थयुं एनुं तेणीने मोटुं आश्चर्य लाग्युं, तथापि त्हेने जोतांज तेणी गाभरी थई उभी रही अने बोलीः–

" अधवचमांज पाछा आववानुं थयुं ! केम कंई भूली गया के शुं ? निकळती वखते म्हने जे कमकमी थती हती ते निष्फळ न्होती ! "

" छेः छेः, भूली तो कंईए गयो नथी. तुं मिथ्या ब्हीश नहीं ! "

" त्यारे पछी म्हें केटलुंए कह्युं, ते सांभळ्युं नहीं अने हवे केम पाछुं आववानुं थयुं ?

" त्हारा माटे ! "

" एटले ? "

" कह्युं एमांज समजी ले ! त्हने आ करतां स्पष्ट शुं कहेवुं ! अरेरे ! बहुज वासना ? " एटलुं बोली ते खूब मोटेथी हस्यो.

त्हेना आ हसवाथी अने उपरनां कामवासनायुक्त वचनोथी रुपसुंदरी एकदम चमकी ! अने तेणीने कांई संशय आववा लाग्यो ! तेणीनी आ साशंकवृत्ति जोई त्हेणे एकदम त्हेणीनो हाथ पकड्यो अने कह्युंः–

" गांडी ! केवा विचारमां पडी छे ? चाल, स्हवार थवाने बिल्कुल वार नथी, पछी निष्कारण वखत शामाटे गुमावे छे ? "

हवे तेणीने एम लागवा मांड्युं के, आ कांई पोतानो पति नथी. " आ कोईपण लुच्चो–लफंगो होवो जोईए. " तेणी पोताना मनसाथे विचार करवा लागी. "एकसरखा मूखाकृतिवाळा होय, तेथी शुं थयु ? सरखा मुखना माणसो जगत्मां नथी शु ? छेः! ते मात्र खात्रीथी नथी. छेः छेः! आवुं गांडपण व्हेना आखा जन्ममां पण देखायुं नहोतुं, पछी आटला अरधा कलाकना स्वभावमां आवो फरक केम पड्यो ? छेः बाई, अहीं कांई खास घोंटाळो होवो जोईए !

कोई कोई वखत स्वर्गमांथी देव पण अनेक प्रकारना वेष लई कोई माणसना व्रतनी परीक्षा ले छे एम म्हें सांभळ्युं छे, त्यारे न जाणे व्हेमांनोज कांई आ प्रकार होय ! ते गमे ते होय. जो आ म्हारो प्रत्यक्ष पति होय, तोपण म्हने जे अर्थे ते परकीय पुरुष होवा संबंधे संशय आवे छे ते माटे व्हेने पोताना शरीरने हाथ लगाडवा न देवो एज योग्य छे. पछी ब्हेतर छे के ते प्रत्यक्ष पति पण होय ! आथी व्हेने गुस्सो पण आवे तो ते क्षणवार पछी दूर करतां आवडशे, परंतु जो म्हारुं चारित्र मलीन थयुं तो ते मात्र म्हने फरीथी उज्वळ करतां आवडशे नहीं. "

आ विचार तेणीना मनमां आवतांज तेणीनो कांई नक्की विचार थयो अने ते साथे तेणी त्हेना हाथने झाटको मारी ओरडीनी बहार नीकळी गई.

पोतानो दाव साधवा माटे जे व्यवस्था युतकारे करी होय अने ते नष्ट थतां जे तेनी अवस्था थाय तेवी स्थिति रुपसुंदरीना पतिनी थई! ते त्यांथी न्हासेली जोई त्हेना शरीरमां भडको सळग्यो. दुःखथी, क्रोधथी अने पश्चातापथी त्हेनुं माथुं फरवा लाग्युं, तथापि पोताना आ सर्व मनोविकार दबावीने ते तेणीनी पाछळ दोड्यो !

रुपसुंदरी ओरडीनी बहार नीकळतांज सासु–ससराना शयनगृहमां पेठी, एटलामां पण त्यां जई तेणीनो हाथ पकडी बहार खेंचवा लाग्यो. कदि पण नहीं अने आजे पोतानो पुत्र आटलो अमर्यादशील केम बन्यो, एनो ते वृद्ध युगलने संशय थयो ! बाकी ते पोतानो पुत्र नहीं होय एवी शंका लाववानुं कोई कारण नहोतुं.

" बेउने कांई प्रेमकलह थयो हशे, छोकरानी जात छे ! " एवो विचार ते वृद्धोना मनमां आववाथी, तेओए रुपसुंदरीने त्हेनी साथे जवा माटे कह्युं, परंतु ते उपरथी रुपसुंदरी एकदम बोलीः–" सासु बा ! अहीं कंई पण दगा जेवुं जणाय छे. त्हमे सारुं कहो के माठुं कहो, परंतु आ माणसने हुं म्हारा शरीरे हाथ अडकाडवा दईश नहीं ! पछी त्हमे बधां मळीने म्हारो जीव लेशो, तोपण बहेतर छे !" हवे तेणीनो संशय वधारे दृढ थयो.

तेणीनुं आ भाषण सांभळी ते वृद्धो निरुपाय थया. तेणीना आ बोलवामां कंई खोटुं एवुं कशुं लाग्युं नहीं, सिवाय ते ग्रहस्थना उद्धतपणा उपरथी तेओने पण पोताना पुत्र प्रमाणेनाज तेज विषयमां संशय आववा लाग्यो हतो.

परंतु रुपसुंदरीनी आवी वर्तणुकथी तेणीना पतिने- रुपसुंदरीना मत प्रमाणे तेणीना पतिनुं आबेहुब रुपांतर करनार ते ग्रहस्थने पगनी आग मस्तक सुधी लागी गई अने ते उपरांत त्हेणे एक थप्पड तुरतज तेणीना म्हों उपर लगावी! आथी रुपसुंदरी, चक्कर खाई एकदम नीचे पडी गई. ते अधम नरे हवे आटलेथी चुप थवुं जोईतुं हतुं, परंतु त्हेनो भडकेलो कामाग्नि तेवी रीते क्यांथी करवा दे? ते तेणीने पोताना शयनगृह तरफ खेंचवा लाग्यो. आथी सासु-ससराथी जोई रहेवायुं नहीं, तेओए तावडतोब पाछळ जई त्हेने तेवी रीते खेंची न जवा विषे ठपको आप्यो. आ वखते ते तरुणने तेमना विषे एटलो क्रोध चढ्यो के तेमनी पण ठीकज खबर लेवी एम त्हेने लाग्युं, परंतु एम करवुं ते पितृवात्सल्य पुत्रने शोभशे नहीं एम शाणपणनो विचार त्हेना मनमां आववाथी, तेमनी साथे मीठा शब्दोमां बोली पोतानुं कार्य सिद्ध करवानो प्रयत्न चलाव्यो.

आ युक्तिथी ते विजयी थाय एटलामां आबेहुब तेना जेवोज अने त्हेना जेटलीज वयनो बीजो एक तरुण त्यां

आवी दाखल थयो ! आथी आ पहेला तरुणने केटली ब्हीक लागी ह्हेनुं यथार्थ चित्र आलेखवुं अशक्य छे, तोपण ह्हेणे पोताना मनोविकार बहार देखाई न आवे, तेवी खबरदारी राखी हती.

पछी आवेलो तरुण पण क्रोधथी लाल लाल थई गयो हतो; अंदर आवतांज रुपसुंदरीनी बांह्य पकडेला ते तरुणने 'मारी स्त्रीनो हाथ पकडनार तुं कोण ?' एम कही ह्हेने एक जोरथी धक्को मार्यो; ते साथे 'म्हारा घरमां पेसी म्हारी स्त्रीने पोतानी स्त्री कहेनार अने म्हने धक्को मारनार तुं कोण ?' एम कही ते पहेला तरुणे आ पछीथी आवेला तरुणने जोरथी धक्को मार्यो।

ते बन्नेनी आ प्रमाणे होंसातुंसी चाले छे अने बिचारा मा-बापना जीवने तो कंई कंई थवा लाग्युं. तेओने पोतानो खरो पुत्र कयो ते समजातुं नहीं; ह्हेमनी लढालढथी रुपसुंदरी पण शुद्धिमां आवी, परंतु तेणीनी पण पोताना सासु-ससरा प्रमाणेज स्थिति थइ. पोतानो पति कोण ते तेणी पण ओळखी शकी नहीं; मात्र पोतानो संशय खरो ठर्यो अने पोते एक पूरा बदमाशना कार-स्थानमांथी बची ते बद्दल तेणीनुं शांत्वन थयुं, परंतु तेणीनुं आ समाधान घणो वखत टक्युं नहीं, कारणके तेणी उपरनां संकटो हजु नष्ट थयां नहोतां, एटलुंज नहीं परंतु तेनुं भयंकर स्वरुप हजु प्रकट थनार छे तेमांथी पोते अने पोतानो पति निर्दोष रीते केम छूटे एज विचार तेणीनुं देहभान भूलाववाने पुरतो हतो !



प्रकरण ५ मुं.

सत्य माटे शरणुं अने अभयकुमारनो न्याय.



ते बन्नेनो आ प्रमाणे घणोज वखत झगडो चाल्यो, परंतु ते पैकी कोईपण हार्यानुं चिन्ह जणायुं नहीं, किंवा ते पैकी कोईपण पोते लबाड छे एम कबुल करे नहीं. आथी ते वृद्ध मावापने वधारे चिंता थवा लागी. आ कारस्थानमां पोते पोताना खरा पुत्रने केवी रीते ओळखी काढवो ते मुश्केल थई पडवाथी ते बिचारांओ मोटेथी रडवा लाग्या ! रुपसुंदरीनी पण तेज स्थिति हती.

आ वखते बराबर दिवस उग्यो होवाथी तेओना रडवा-ककळवाथी आडोशीपाडोशीनी तथा बीजा लोकोनी घणीज ठठ्ठ नामी हती ! परंतु ते तरुणोने बोलवानुं कारण अने उभय-नो चहेरो, अवाज, उमर अने पोशाखना सरखापणाथी तेमनी अक्कल पण गुम थई गई ! मावाप के स्त्री, ज्यां पोतानो पति कोण ते ओळखी शके नहीं त्यां इतर लोकनी तो वातज शुं ?

लोकोए ते बन्नेने अनेक प्रकारना प्रश्न पूछया, परंतु ते बन्नेए रुपसुंदरी उपर पोतानो सरखोज हक्क तेटलाज जोरथी बताववा लाग्या अने बन्ने पण एक बीजाने चोर कहेवा लाग्या.

'पहेला आवेलो' अने 'पछी आवेलो' तेओने जोवाने ए एक भेद साधनरुप हतो, पण बन्नेमां मारामारी अने धक्का बाजीथी ते पण नष्ट थयुं हतुं.

आखरे भेगा थयला टोळाथी रुपिणीनो खरो पति कोण छे ते ओळखी काढवाने पण कांइ सहाय थयुं नहीं, परंतु उल्टुं तेणीना संबंधे कुत्सित थवा लागी. जेवी रीते काग पक्षी विष्टा माटे तलपी रहे तेवीज रीते समाज बीजाना दोषो माटे हमेशां टांपी बेठेला होय छे, एकाद त्हेमने जडी आवे एटले त्हेने पोते एकदम कृतार्थ थया जेवुं लागतुं, तेमांथी ते विष्टानो संबंध स्त्रीओने हशे, तो त्हेना आनंदनो पारावारज नथी. रुपसुंदरीए शीलव्रत लीधा पछी तेणी ते गामनी कुत्सित मंडळीनी बेसुमार टीकाने पात्र थई हती. तेमने तेणीनुं ते पछीनुं शुद्ध वर्तन मात्र ढोंग लागतो हतो अने वळी त्हेमां आ भांजगड उपस्थित थवाथी सारुं फाव्युं. तेणीना आ विषये घणीज कुत्सित टीका करावचा शरु कर्युं. "पोताना शीलव्रतनो बगाड न थाय एटले पतिनी समय परत्वे घणीज परीक्षा करवाने रुपसुंदरीज हती." ए एकज वाक्य ते टीकाने पुरतुं हतुं.

भूलेला मनुष्यने सुधारवानुं तो एक बाजुए रह्युं, परंतु ते पोते थई सुधरवा प्रयत्न करे तोपण त्हेनी पहेली भूल पुनः पुनः त्हेना समक्ष खडी करी समाज, त्हेने नाहिंमतवान्

बनावी अने आ बीजी अवस्था करतां पहेली तेणीनी पतीताव-स्थाज व्हेने सुखावह केम लागे, ए रुपसुंदरीना उपला उदाहरणथी सारी रीते लक्षमां आवशे. रुपसुंदरीने आवी असह्य टीका सहन करवानां अनेक प्रसंग त्यारथीज आव्या हतां, पण ते तेथी बिल्कुल डगमगी नहीं, किंवा पोताना निश्चित मार्गथी खसी पण नहीं.

रुपसुंदरीना निग्रह बद्दल वाचकने आश्चर्य लागशे, परंतु तेणीना स्वभावना एक विशेष गुण तरफ लक्ष आपीए तो तेवुं आश्चर्य लागवानुं कंई कारण रहेशे नहीं. मनोवृत्तिनुं काबेलपणुं एज तेणीमां विशेष गुण हतो. आवा स्वभावना माणसो घणाज विरल होय छे.

खेर! आ मामलो नवरा माणसोने तमाशारुप व भोजना पकवानरुप थयो अने तेनो यथेच्छ स्वाद लेवा माटे तेवा प्रकारना माणसो भेगां पण थयां, परंतु तेथी संकटमां सपडायला माणसोने केवो त्रास थयो ते उपरज कही गया. आखरे केटलाक समजु मनुष्योए, राजदरबारमां जई आ मामलानो निकाल करी लेवा ते बन्ने तरुण अने रुपसुंदरीना सासु–ससराने सूचना करी अने तदनुसार तेओ राजसभामां गयां.

आ विलक्षण हाकिकत सांभळीने अने ते बन्ने तरुणने जोई श्रेणिकराजाना दरबारना मनुष्यो आश्चर्यमां गरकाव थई गयां. आ वखते न्यायाधीशनी जग्याए युवराज अभयकुमारनी

निमणुक थई हती. पहेलां आवाज प्रकारना बे विलक्षण केसनो, अभयकुमारे पोताना अलौकिक न्यायचातुर्यथी निकाल करी, सत्य बहार पाडी श्रेणिकराजाने मदद करी हती, जेथी तेमने आ महत्त्वनी पद्वि प्राप्त थई हती, तथापि आ हकिकत सांभळी तेओ छक्क थई गया. तेमणे ते बन्ने तरुणनी तेमज बीजा घणाज जाणीता मनुष्योनी जुबानी लीधा छतां पण रुपसुंदरीनो खरो पति कोण ते तेओ समजी शक्या नहीं.

आ विचित्रपूर्ण जगत्मां केवळ बे माणसनो एक सरखो च्हेरो होय ते असंभवनीय छे, एमां तेमने बिल्कुल शंका नहोती अने तेथी आ बे पैकी कोईपण हरामखोर होवो जोईए ते वात खुल्लीज हती; तोपण आ बन्नेमां हरामखोर कोण अने तेनुं पोगळ केवी रीते खुल्लुं करवुं तेज काम कठण हतुं,. अने ते बाबत घणो विचार कर्या छतां पण कांई सुज पडी नहीं. रुप-सुंदरीनी अगाउनी अयोग्य वर्तणुक अने ते प्रमाणेज पछीथी ते जग्याए उत्पन्न थएली अढळ सद्गुणप्रीति आ बन्नेनी माहिती तेमने घणाज साक्षीदार पासेथी मळी हती. वळी केटलाक साक्षीदार तरफथी तेणीना विषये आ सद्गुण-प्रीति एटले केवळ ढोंग छे एम तेमने जणावी तेमनुं मन ते विषये कलुषित करवा प्रयत्न कर्यो हतो, परंतु ते सफळ थयो नहीं; एटलुंज नहीं परंतु तेमना मनमां तेणीना माटे करुणा उत्पन्न थई अने तेणीनी आ नवीन विशुद्ध

प्रवृत्तिने पोषक एवोज न्याय पोताना हाथे तेणीने मळे एम तेओ मनमां ने मनमां परमात्मानी प्रार्थना करवा लाग्या. खरेखर, सद्‌गुणनी किंमत नहीं समजनारा एवा एकाद न्यायाधिश पासे प्रस्तुत मामलो गयो होत, तो रुपसुंदरीनी पूर्व वर्तणुक तरफ लक्ष आपी ते बंन्नेमांथी तेणीनो कोईपण पति ठराववामां विलंब लागत नहीं.

अभयकुमारना लक्षमां एक विलक्षण कल्पना उद्‌भवी. तेमणे ते बंन्नेने जुदी जुदी ओरडीमां पूर्या अने तेमने ' जे आमांथी पोतानी मेळे बहार आवशे, तेज रुपसुंदरीनो खरो पति गणाशे ' एवा प्रकारनी सूचना करी.

न्याय करवानी आ अजब रीत जोतांज ते बन्ने पैकी एक तरुण गभरायो अने मोटे सादे बोलवा लाग्यो:—

" महाराज ! जो आपनो आवोज न्याय होय तो तेनो आ तमाशो पण शा माटे करो छो ? हाय रे दैव ! आ श्रेणिकराजानो पुत्र, महान न्यायी कही सघळुं जगत् वाहवाह करे छे, परंतु तेनो आज न्यायनो रस्तो के ? तेना तरफ पण शुं दोष ! हुंज जन्मथी बे नशीबवान ! छोड, राजपुत्र छोड, म्हनेज अहींथी काळुं करवा दे, एटले त्हने न्यायनो आवो अजब तमासो करवानी महेनत पण पडशे नहीं. " आ बोल बोलतांज त्हेनी आंखमां अश्रु भराई आव्यां. ते आथी पण वधारे बोलवा इच्छतो हतो, परंतु तेम करतां सिपाईओए त्हेने अटकाव्यो.

परंतु जे वात एकने दुःखप्रद थई तेज बीजाने अत्यंत आनंदकारक दीसवा लागी. आ रीतथी त्हेने एटलो हर्ष थयो के, त्हेना मनमां ' हवे रुपसुंदरी म्हारी, हवे रुपसुंदरी म्हारी ' एम बोलतां बोलतां नाचवा लाग्यो.

त्हेनुं प्रत्यक्ष नृत्य जो के दरबारना माणसोने देखायुं नहीं परंतु त्हेना उपरना विजयदर्शक उद्‌गार सर्वेना सांभळवामां आव्या.

खरो प्रकार शुं छे ते आ प्रमाणे बहार पड्यो. वास्तविक रीते जोईए तो आज वखते आ मामलानो निकाल करवाने अभयकुमारने बिल्कुल हरकत नहोती, कारणके ते प्रमाणेज दरबारमां इतर चाणाक्ष लोकोने पण रुपसुंदरीनो खरो पति कोण छे ते हवे स्पष्ट समजातुं हतुं, परंतु पोताना न्यायमांथी सत्यनो प्रकाश तद्दन मूढ माणसना हृदय पर पडे, एवीज अभयकुमारनी हमेशनी न्याय करवानी पद्धति होवाथी आ वखते पण तेमणे विलंब कर्यो.

आ प्रमाणे थोडो वखत गयो नहीं एटलामां तेज ओरडीमांथी बाकाना रस्ते ते बे पैकी एक जण एकदम बहार आव्यो !

आ विलक्षण प्रकार जोतांज सघळी सभा क्षणभर आश्चर्यमां चक्क थई गई, पण ते साथेज रुपसुंदरीनो खरो पति कोण अने कंई अलौकिक सामर्थ्यथी त्हेनुं आबेहुब रुप लेनार हरामखोर कोण ? ते त्यां भेगा थयलां मनुष्योना लक्षमां आववाने विलंब थयो नहीं.



प्रकरण ६ ठुं.



सत्य हकिकत जणाई आवी.



ते तरुण बहार आवतांज अभयकुमारे ' आ हरामखोरने पकडी राखो ' एवी एकदम गर्जना करी, अने तेज वखते त्हेने चतुर्भूज करवामां आव्यो. पछी अभयकुमार त्हेनी पासे जई अत्यंत शांतपणे बोल्या:-

" तरुण ग्रहस्थ ! त्हारे हजु पण जो म्हारी पासेथी दयानी अपेक्षा करवानी होय तो पोतानुं खरुं स्वरुप प्रकट करी खरी हकिकत शुं छे ते कहे. "

हवे आडाअवळां व्हानां काढवामां फायदो नथी एवुं ते तरुणने स्हमजायुं. पोते संपादन करेला अलौकिक सामर्थ्य साथे खरी अकल थोडी पण राखी होत तो ओरडीमांथी व्हार नीकळवानुं आवा प्रकारे मूर्खपणुं कर्युं न होत अने त्यारेज रुपसुंदरीनी प्राप्तिनी कांईपण आशा राखी शकात, परंतु हवे तेनो शुं उपयोग ? ते करतां तेमने सघळी खरी हकीकत कही तेमनी दयानीज अपेक्षा करवी तेज उत्तम छे.

एम विचार करी, त्हेणे पोताना म्होंमांथी एक गुटिका (गोळी) काढी अभयकुमार समक्ष मुकी, पण ते साथे जे विलक्षण चमत्कार बनी गयो तेथी सर्व सभासद आश्चर्यना समुद्रमां डूबवा लाग्या ! ते तरुणनुं एकदम रुपांतर थई सर्व नगरवासीओनो परिचित ' देवदत्त ' बन्यो !

वाचक ! आ तरुणनुं मूळ रुप आज ! अने आ बीजो त्रीजो कोई नहीं, परन्तु त्रीजा प्रकरणमां रुपसुंदरीने धमकी आपी निराश थयेलो अत्यंत परिचयवाळो ते देवदत्तज. एणे आवी अलौकिक करामत क्यां अने केवीरीते संपादन करी ते आगळ स्हमजाशे.

सर्व सभा शांत थया पछी तेणे पोतानी हकिकत कहेवानो आरंभ कर्यो. प्रथम रुपसुंदरीनो अने पोतानो अचानक मेळाप केवी रीते थयो अने ते पछी कबुल कर्या प्रमाणे तेणी पोतानी पासे न आववाथी, तेणीना घेर जई, तेणीनुं मन पोता तरफ वाळवा प्रयत्न कर्यो, पण ते निष्फळ गयो ते सर्व हकिकत कही आगळ बोल्यो:—

" तेणीए आवा प्रकारे म्हारुं मनोभंग कर्या पछी पण म्हने तेणीनी प्राप्तिनुं गांडपण लाग्युं हतुं. म्हें घणा प्रयत्न कर्या, पुष्फळ कुटणीओने तेणीनुं मन म्हारा तरफ वाळवा माटे रोकवामां आवी पण तेनो कंई उपयोग थयो नहीं ! मात्र ते नीच स्त्रीओए म्हारा पैसा पडाव्या ! आखरे जारणमारणादि

विद्या संपादन करी रुपिणीने ठेकाणे लाववी किंवा कोई वशीकरण मंत्र साध्य करी, तेणीने पोतानी बनाववी एवो म्हें निश्चय कर्यो! परंतु आ काममां पण म्हारी निराशाज थई! लफंगा अने लुच्चा गोसांईओए मीठी मीठी थाप मारी म्हने घणोज नचाव्यो अने घरबार वेची जे पैसा एकठा कर्या हता तेमांना घणाज खरची नांख्या! तथापि आटलुं थवा छतां पण रुपसुंदरीने वश करी लेवानो म्हारो नाद—विचार बिल्कुल ओछो थयो नहीं. आ कामी शरीरने शारीरिक त्रास पण घणोज सोसवो पड्यो! आवा प्रकारनी विद्या जाणनार मनुष्य अमुक ठेकाणे रहे छे एम म्हने स्हमजाय के, टाढ तडको न जोतां त्यां जतोज! पछीथी गमे ते थाओ!!

"ठीक, मांत्रिकोने गामोगाम शोधता फरवानो एटलोज त्रास म्हने भोगववो पडयो एम नहीं, पण ए विद्या साध्य करवा माटे जुदाजुदा मांत्रिको जे जूदीजूदी अगर एकज जातनी साधना करवाने म्हने कहेता ते करतां छतां पण फक्त कहेला त्रास करतां पण घणोज भयंकर त्रास सोसवो पडयो!"

"कोई नदीमां गळा जेटला पाणीमां बेसी मंत्र साधन करवा कहेतुं, त्यारे कोई स्मशानमां नग्नपणे उभा रही साधन करवा फरमावतुं! कोईना साधनमां झाडे उंधा मस्तके टंगावानी जरुर पडती, त्यारे कोई मलीन पदार्थ खावा कहेतुं! ग्रहण, अमावास्या अने शनिवार एटले आ साधवानो शुभ दिवस अने उत्कृष्ट मुहूर्त एटले रात्रिना बारनुंज ठरेलुं होय!"

" म्हें ए सर्व दिवस अने मुहूर्त साचव्यां, परंतु तेनो कंई फायदो नहीं, मात्र फजेती अने बेहालज थयो."

" आ विद्या साधवा माटे केटलीक वखत रात्रे फरतां फरतां, लोकोए चोर समजीने घणो मार पण मार्यो अने ते म्हारे मुंगे म्होंढे सहन करवो पडयो, अने नदीमां गळा जेटला पाणीमां शोध करतां करतां केटलीक वखत तळीए पण जई बेसतो. एक वखत नदीमां उभा रही मंत्रोच्चार करवा म्हों उघाडतो के तरतज तेमां पाणी भराई जई सदाने माटे बंध थवानो वखत आवतो. आ सिवाय कलाकनाकलाक आवा प्रकारे ठंडा पाणीमां गाळवानो महिना सुधी वखत आवतो ते जुदोज !"

" एक वखत एक साधन माटे एक झाडे टंगाता, तेज झाड म्हारा शरीर उपर धसी आव्युं, परन्तु पाछळथी स्हमजायुं के हुं ज्हेनापर टंगातो हतो ते झाड तद्दन कोमळ छे."

" तेमज एक वखत स्मशानमां म्हारा उपर जे प्रसंग आव्यो हतो ते घणोज भयंकर हतो, तेनुं स्मरण थतां हजु पण कंपारी छुटे छे. अमावास्यानी रात्रि हती, ऊंधा सूई मंत्र साधन करवानुं हतुं अने ते पण मनमां; गमे ते थाय तोपण म्होंमांथी एक शब्द सुद्धां काढवो नहीं एवो मारा गुरुनो हुकम हतो. आ प्रमाणे म्हें साधनना कामनो आरंभ कर्यो अने थोडो वखत थयो नहीं एटलामां गामना लोको एक प्रेतने बाळवा

माटे त्यां लई आव्या. अंधाराने लीधे प्रथम तो हुं तेमनी नजरे पड्यो नहीं ! पण तेओए सळगावेला अग्निनो प्रकाश ज्यारे चारेतरफ प्रसरी गयो त्यारे तेओनी दृष्टि म्हारा उपर पडी, परन्तु म्हारी ते नग्न अथवा भेसुरमूर्ति जोतांज तेओमांना केटलाक बहुज ब्हीकण माणसो, म्हने पिशाच समजी बूम पाडतां पाडतां दूर नाठा; जेओ अर्धा ब्हीकण हतां तेओ स्थंभ माफक त्यांना त्यांज चोंटी गया अने केटलाक हिंमतवान मनुष्य खरी हकिकत शुं छे ते समजवा म्हारी पासे आव्या. '

प्रथम तेओए म्हने हांक मारी, पण हुं तेओने जवाब आपवाने थोडो सुतो हतो ! पछी तेओए म्हने खूब जोरथी हलाव्यो परन्तु बिल्कुल हाल्योज नहीं. छेवटे हुं खेरखरो मृत्यु पामेलो छुं के जीवतो छुं ते जोवामाटे मने एक मोटो चीपीओ मार्यो, परंतु ' गमे ते थाय तोपण एक शब्द पण उच्चारवो नहीं ' ए अमारा गुरुजीनो हुकम म्हें अक्षरसः पाळ्यो ! हवे तेओने एम पाकी खात्री थई के आ प्रेत-मुडदुं छे. तेओ ' राजद्वारे स्मशाने च य स्तिष्ठति स बांधवः' एवा विचारना अत्यंत धार्मिक अने परोपकारी होवाथी म्हारा बीनवारसी अनाथ प्रेतने अग्नि संस्कार आपवो, ए तेओने पवित्र कर्तव्य समजायुं, तथापि नवी चीता रचवानी कडाकूटमां तेओ पड्या नहीं, कारण तेनी सामग्री तैयार न होती अने ते लाववा माटे घणोज वखत जाय तेम हतुं, आथी ए त्रासमां न पडतां सळगावेली चितामांज आ बीजीने (मने) पण आहूति आपवानुं ठराव्युं. "

" आ वखते म्हें विचार कर्यों के, शुं गुरुनी आज्ञा तोडवी ? परंतु बीजीज पळे एम थई आव्युं के, साधन माटेनो आज वखत केम न होय ? माटे गमे ते थाय तोपण बोलवुं के हालवुं नहीं. आखरे चार-पांच जुवान माणसो म्हारी पासे आव्या अने म्हने उंचकी ते सळगती चीतामां पधरावी दीधो. ज्यारे चीता उपर म्हने मूकवामां आव्यो अने तेमांना अंगारानी झाळ म्हारा शरीरने लागवा मांडतांज सिद्धि परत्वे म्हारो विचार अने गुरुनी आज्ञा न तोडवानो निश्चय एकज क्षणमां नाश थयो ! हुं मोटा शंखध्वनिथी 'मरी गयो ! मरी गयो !! बचावो, व्हार काढो' एम कहेतां बहार कूदी पडयो."

" आ विलक्षण प्रकार जोतांज माल चीता पासे आवी उभेला व्हीकण मनुष्यो " अरे ! भूत रे भूत ! खरेखर भूत !" एम कही-दोडधाम करी मूकी दूर नाठा."

" आ वखते ज्हेने अनाथ प्रेत समजी अग्निसंस्कार कर्यो ते खरेखरुं प्रेत नहीं, पण कोई महा बदमाश साधक होवो जोईए, एम ते परोपकारी माणसोना लक्षमां आववाने वार थई नहीं. म्हारा आ पाजीपणाथी चीता ढसळी पडी, जेथी मूळ प्रेतना दहनमां पण धक्को पहोंच्यो. आ जोतांज तेओने खूब गुस्सो चढ्यो अने ते गुस्सामां चीतानी ज्वाळाथी प्रथम तो हुं 'अधमूवो' थई गयो हतो ते तरफ लक्ष न आपतां म्हने यथेच्छ स्वाद चखाड्यो !"

आ हकिकत बनी गया पछी मात्र जारण, मारण, वशी-करण वगेरे बाबतमां मारी पूर्ण निराशा थई अने मंत्रसाधको

उपर पण तिरस्कार छूट्यो, तथापि रुपसुंदरीनी बाबतमां म्हारी घेलछा बिल्कुल कमी थई नहीं ! तेणीनी प्राप्ति केवी रीते करवी तेनी मन सुझ पडे नहीं ! आवी स्थितिमां हुं एक सरखो जंगले जंगले भटकतो हतो. एक दिवसे म्हारा सुदैवे पर्वतनी गुफामां एक महात्मा मळ्या. ते वखते तेमनी सेवा करी रहेवानो निश्चय कर्यो. तेमनी सेवाथी थनार पुण्य प्राप्तिथी पण रुपसुंदरीनी प्राप्ति थशे एम म्हने लागवा मांडयुं. पछी हुं ते महात्मानी सेवा करतो तेमनी पासे घणाज दिवस रह्यो, परंतु म्हारो ते नीच हेतु तेमने कहेवानी कदिपण म्हारी हिंमत थई नहीं."

आवी स्थितिमां कर्मसंयोगे एक दिवस हुं जागृत थई जोवा लाग्यो तो ते महात्मा—सिद्धपुरुष पोतानी तृणशय्या पर नथी ! तेओ क्यां गया, ते जाणवा सारु नीरखीनीरखीने जोवा लाग्यो, तो गुफानी छेवटनी टोच पर तेमनी मूर्ति दृश्यमान थई ! त्यां तेओ शुं करे छे ते हुं सुतांसुतांज जोवा लाग्यो. एक बखोलमांथी कोई वस्तु लई, ते तेमणे पोताना म्होंमां नांखता म्हने देखायुं, पण ते साथे चमत्कार शुं थयो ? ते महात्मानुं एकदम रुपांतर थई, अत्यंत कुरुप व कुष्टरोगी एवो एक भीखारी बन्यो. आ प्रकार जोई म्हारा आश्चर्यनो पार रह्यो नहीं. पछी तेओ त्यांथी नीकळी गया, पण क्यां गया अने शुं कर्युं ते म्हने बिल्कूल स्हमजायुं नहीं ! अगर ते समजवानी म्हें दरकार पण राखी नहीं ! पछी बीजा दिवसे

तेज वखते तेओ फरीथी त्यां आव्या अने म्होंमांनी ते वस्तु पूर्वस्थळे मुकतांज तेओ पूर्वस्वरुपमां आवी गया ! आ बनाव पण म्हें सुतां सुतांज जोयो, तेथी ते साधुना लक्षमां आव्युं नहीं त्यार पछी पण ते महात्माए ते वस्तुथी पोतानुं रुपांतर करेलुं म्हें जोयुं, त्यारे ते वस्तुमांज ते अलौकिक सामर्थ्य होवुं जोईए एवी म्हारी खात्री थई. थोडा दिवस बाद एक दिवस ते महात्मा बहार गयेला होवाथी ते वस्तु शुं छे ते जोवा गुफानी टोचे ज्यां ते मुकेली हती त्यांथी ते काढी जोई तो ते एक गुटिका जणाई. (आपनी समक्ष मुकेली तेज गुटिका छे.) ते साथे तेनुं अद्‌भूत सामर्थ्य जोवानी इच्छाथी रुपसुंदरीना पति प्रमाणे म्हारुं रुपांतर थाओ ' एवी भावना धरी म्हें ते म्होंमां मूकी तो आश्चर्यनी शुं वात कहेवी ? हुं तद्दन ते प्रमाणेज बनी गयो. आ वखते म्हने जे आनंद थयो ते अवर्णनीय हतो. म्हने प्रत्यक्ष स्वर्गना किल्ला हाथ आव्या होय, ते प्रमाणे लागतुं. पछी हुं आगळ पाछळनो विचार न करतां त्यांथी एकदम न्हासी छूटयो. ते महात्मा आवी म्हने पकडशे के शुं ? एवी धास्ती लागती हती पण सुदैवे तेवुं कंई बन्युं नहीं ! पछी केटलाक दिवसे अहीं आवी पहोंच्यो. अहीं आव्या पछी हुं आखो दिवस जंगलमां रही रात्रिए गाममां फरतो हतो. त्यारबाद गई काले रात्रे लाग जोई हुं रुपसुंदरीना घर पासे जई, मरघा प्रमाणे बोल्यो. ते साथेज मारी धारणा मुजब बनी आव्युं अर्थात् रुपसुंदरीनो

पति नियम प्रमाणे खेतरमां जवा नीकळी पड्यो. खरीरीते ते अपराति हती, पण म्हें उच्चारेला मरघाना आबेहूब स्वरथी ते फसायो!"

"ते खेतरमां जवा निकळतांज म्हारा आनंदनो पार रह्यो नहीं! हवे तेणीना पतिनुं स्वरुप लई तेणीना प्रेमनी यथेच्छ मजाह लूंटवी एम में ठराव्युं. म्हारुं सर्व बाबतमां तेणीना पति जेवुंज आबेहूब रुपांतर थवाथी तेणीने म्हारा बद्दल शंका आवशे एवी कल्पना पण म्हारा मनमां आववाने कांई कारण नहोतुं. पति समजी म्हाराथी ते यथेच्छ प्रेमविलास करशे एवी म्हारी पूर्ण खात्री हती. खेतरमां गया हता अने पाछा केम आव्या? एम जो पूछशे तो त्हेनो गमे तेवो मीठो जवाब आपीश एटले थयुं!

सौन्दर्यसंपन्न रुपसुंदरीना प्रेमामृतनो आस्वाद पोताने मळशे अने तेनाथी तृप्त थया पछी पोतानुं खरुं स्वरुप प्रकट करी "देवदत्ते लीधेली प्रतिज्ञा केवी सिद्ध करी ते तेणीने कही, ते कदाग्रही, मानी अने ढोंगी ललनानो गर्व नाश करुं." एवा प्रकारना विचार मनमां करतोकरतो तेणीनी ओरडीमां पेठो, पण त्यां गया पछी सघळी बाजी फरी गई. म्हने जेनी कल्पना पण नहोती ते वात खरी ठरी! चतुर स्त्रीने म्हारा विषे पूर्ण संशय आव्यो अने ते म्हारा सपाटामांथी नीकळी गई! आवो प्रकार बनशे एवी म्हारा मननी कल्पना पण न होवाथी ओरडीनां बारणां पहेलेथीज बंध करी लेवानी खबरदारी

करी नहोती, नहितो ते वखते बळात्कारे पण हुं पोतानो नीच हेतु सिद्ध करवामां आघुंपाछुं जोत नहीं. मात्र ते वखते तेणीनीं सद्गुणनिष्ठा अने शीलप्रेम केटलां जागृत छे एज म्हारा अनुभवमां आव्युं."

"तथापि आटली खटपट अने जन्मजन्मतांरे पण जे साधन मळवुं दुर्लभ छे, ते प्राप्त थयां छतां पण निष्फळ थयुं ए जोई, म्हने ते वखते केटलुं भयंकर दुःख थयुं हशे एनी मात्र कल्पनाज करो! हुं दुःखथी अने पश्चाताप-थीं मात्र गांडोघेलो थवानी तैयारीमां आव्यो हतो तथापि प्रसंग विचारी तेणीने फरीथी पोताना सपाटामां लाववी एम धारी तेणीनी पाछळज दोड्यो, परंतु तेणी पोताना सासु-ससराना आश्रयमां जई बेठी. म्हने तेणीना मननुं समाधान करी, पाछी ओरडीमां लाववी ए घणुंज विकट स्हमजायुं, तथापि आखरे हुं तेमां फत्तेहमंद थयो अने ते प्रमाणे हवे तेणीनी संमतिथी हुं लई जाउं तेटलामांज तेणीनो पति त्यां आवी दाखल थयो. आ वखते म्हारी जे मश्करी थई, तेनुं यथार्थ स्वरुप स्हमजाववुं अशक्य छे! तेज वखते रुपसुंदरी बाबत म्हारी निराशा थई, परंतु लीधेला वेषने पूर्णपणे छेवट सुधी जाळवी राखवो, एवो अविचार थवाथी हुं तेमनाथी वादविवाद करतोज रह्यो."

तेणीनो पति आवी खरी वखते त्यां केम आव्यो ते बद्दल म्हने प्रथम मोटुं आश्चर्य लाग्युं, पण रुपसुंदरीनो संशय

खरो छे के खोटो छे ते जोवा माटे तेणीना ससराए खेतरमां पोताना पुत्रनी शोध माटे नोकर मोकल्यो हतो तेथी ते एकदम त्यां आव्यो एम म्हने पछीथी स्हमजायुं."

"ए पछीनी सर्व हकिकत आपने मालमज छे! म्हारी खरी हकिकत शुं ते आज! हवे आप म्हने बचावो या मारो! बाकी म्हने म्हारा नीच कर्मनो हवे अत्यंत पश्चाताप थाय छे अने रहेलुं आयुष्य कोईपण निर्जन प्रदेशमां इश्वरभक्तिमां निर्गमवानो म्हें निश्चय कर्यो छे. आप अत्यंत दयाळू छो, म्हारो जो के भयंकर गुन्हो छे तोपण तेने योग्य शासन मळी चुक्युं छे एम समजी म्हारा उपर क्षमा करशो एवी आशा छे."

प्रकरण ७ मुं.

देवदत्तने क्षमा अने सत्यनो जय.

देवदत्तनी हकिकत सांभळी सर्वे मनुष्यो आश्चर्यमां गरकाव थई गया! पछी अभयकुमार लोकने उद्देशीने कहेवा लाग्या—

"सभ्य गृहस्थो! आ मामलानो निकाल हवे थया छतां गुन्हेगारनी इत्थंभूत हकिकत पण आपणे त्हेनाज मोंढेथी

सांभळी छे. आ बाबतनुं मूळ कंईपण अलौकिक चमत्कार होवो जोईए एम प्रथमथीज म्हारा लक्षमां आव्युं हतुं, परंतु ते बहार केवी रीते काढवुं तेज अशक्य हतुं, छतां तरतज त्हेनुं यथार्थ स्वरुप बहार पाडवानी आ सफळ थयेली युक्ति म्हारा मगजमां आवी ! साधारण रीते व्यवहारमां आपणने अनुभव छे के, चमत्कार पाछळ लागेला मनुष्यने बिल्कुल अक्कल होती नथी, किंबहुना, जेने कोडीनी पण अक्कल न होय एवाज लोक चमत्कारप्राप्ति पाछळ लागेला होय छे, अने तेज अनुभव आपणने अहिंयाज मळ्यो ! आ तरुण गृहस्थने थोडी पण अक्कल होत तो, ते बंध करेली ओरडीमांथी बहार आववानुं आवुं मूर्खपणुं न करत, अने तेम थयुं होत तो आपणुं न्यायनुं काम आटलुं सुलभ थयुं न होत, तथापि गमे ते थाय तोपण असत्य कंइ छेवट सुधी टकी शकत नहीं ! ते कदि पण बहार पडतज ! हशे, हवे आ ग्रहस्थने त्हेना कृतकर्मनो पश्चाताप थयो छे अने निर्जन प्रदेशमां रही जिनेंद्रसेवा करवानो त्हेणे पोतानो निश्चय आपणने जणाव्यो छे जेथी म्हने लागे छे के, त्हेने क्षमा करवी एज उचित थशे, सिवाय त्हेणे पोताना आयुष्यनो जे आगळनो ध्येय ठरावेलो छे ते पण एक प्रकारनी शिक्षा प्रमाणेज छे ! " पछी ते देवदत्त तरफ जोई बोल्या:-

" तरुण ग्रहस्थ ! त्हने पोताना कृतकर्मनो थयेलो-पश्चाताप जोई हुं त्हने त्हारा अपराधनी क्षमा करुं छुं. मात्र

त्हारे पोतानो जाहेर करेलो निश्चय अमलमां मुकवा माटे आज क्षणे अहींथी चालता थवुं जोईए. फरीथी तुं कोईपण जग्याए लोकवस्तीमां अटक्यो किंवा त्हारो पश्चाताप खोटो छे एम अमने जणाई आवे, तो त्हने ज्हेनी कल्पना पण थशे नहीं, एवी भयंकर शिक्षा त्हारे भोगववी पडशे !"

अभयकुमारनुं आ भाषण सांभळतांज देवदत्तने घणुं लागी आव्युं अने तेवीज स्थितिमां त्हेमना पगपर मस्तक मुकी, एक सरखो अश्रुवर्षाव करवा लाग्यो. हमेशना माटे त्हेना मनपर एटलुं विलक्षण परिणाम थयुं के, त्हेने ते न्यायाधीश न लागतां साक्षात् ईश्वरज भासवा लाग्या.

पछी पोतानुं मस्तक उठावी लई रुपसुंदरी तरफ वळ्यो अने तेणीना पगपर मस्तक मुकी बोल्योः—" भगिनी ! आ पतीत बंधुए त्हारी साथे जे नीचपणाथी वर्तन कर्युं, ते बद्दल अंतःकरणपूर्वक त्हारी क्षमा मांगे छे ! त्यारे ते सर्व अपराध वीसरी जई आ दयासागर न्यायमूर्तिप्रमाणे तुं पण क्षमा कर. ब्हेन ! आ अधमने पोताना कृत्यकर्मनो पश्चाताप थवामां, म्हारा सर्व नीच मनोविकार शांत बनवामां, किंबहुना म्हारुं सर्वस्व परिवर्तन थवामां त्हारोज अचळ सद्गुणप्रेम कारणभूत थयो, माटे हुं जन्मजन्मांतरे पण त्हारोज ऋणी रहीश!"

आ वखते ज्हेनी आंखमांथी अश्रुबिंदु नीकळ्या नहीं होय, एवा मनुष्य त्यां भाग्येज हशे !

रुपसुंदरीए त्हेने अंतःकरणपूर्वक क्षमा करतांज ते त्यांथी नीकळी पडयो.

त्यारबाद अभयकुमारे रुपसुंदरीना पतिनो हाथ तेणीना हाथमां आपी कह्युं:—

"प्रिय भगिनी! फरीथी एकवार त्हारा खरा पतिथी हुं त्हारुं पाणीग्रहण करावुं छुं. सदैवे म्हने आ काममां यश आपी, त्हारा सद्गुणनां मीठां फळ त्हने मळ्या ते बद्दल म्हने अतिशय आनंद थाय छे! त्हें जे व्रत लीधुं छे, ते आवाज निश्चयथी पाळ! संकटथी बिल्कुल ब्हीश नहीं! सद्गुणी माणसना अचळ निश्चय आगळ संकटनो बिल्कुल टकाव थतो नथी, ते हवे त्हारा उदाहरण उपरथीज खुल्लुं छे. पोतानुं पातिव्रत्य भंग न थवा देवानी बाबतमां त्हारो निश्चय जोई म्हने जे आनंद थयो ते कही संभळाववो अशक्य छे! जाओ, हवे सुखेथी रहो, त्हमारुं सदैव कल्याण थाओ!

आ वखते अभयकुमारनुं न्यायचातुर्य अने रुपसुंदरीनी सद्गुणनिष्ठा ए विषये त्यां एक सरखो जयजयकार थयो. त्यार बाद ते पतिपत्नि पोताना मातापितासह मोटा आनंदथी घेर आव्यां अने रुपसुंदरी, पोताना पति सहित पोताना सद्गुणनां मिष्ट फळो चाखती अति आनंदमां काळ निर्गमन करवा लागी.



२२ श्री महावीर चरित्र (निर्वाणकांड भाषा–गाथा अन निर्वाण पूजनसहित हिंदी २०००) ०)-||
*२३ श्री कुंदकुंदाचार्यचरित्र (गुजराती १७००) ०)≡
*२४ श्राविकाबोध स्तवनावळी (गुजराती–हिंदी २०००)०)-
२५ आपणी स्थितिमां शुं संतोष राखवो जोइए(२०००)०)=
*२६ श्री श्रीपालचरित्र (हिन्दी २०००) १)=
२७ श्री जम्बूस्वामी चरित्र (हिंदी भाषा २०००) ०|
२८ प्रात:स्मरण मंगलपाठ (हिंदी २०००) ०)
२९ श्री दशलक्षण धर्म (कथा सहित. हिंदी २०००) ०|-
३० त्रेपनक्रिया विवरण (गुजराती २०००) ०)-||
३१ श्रेणिकचरित्र (हिंदी १००० पृ. ४०० पाकुं पुंठुं) १|||
३२ जिनचतुर्विंशतिकाव्य (हिन्दी प्र. २२००) ०)-
*३३ ईश्वरका कर्तृत्व (हिन्दी) विनामूल्य
३४ तत्त्वार्थसूत्र (गुजराती टीका ५०० पृ. २००) ०||=
३५ जीवविचार (गुजराती २१००) ०)≈
३६ सागारधर्मामृत पूर्वार्द्ध (पृ.३५०.प्र.२२५०हिन्दी) १||
३७ श्राविका सुबोध (गुजराती प्र. २१००) ०|≈
३८ बालशिक्षा (हिन्दी २१००) ०)-||
३९ रूपसुंदरी (गुजराती २१००) ०|
४० हिंदीभक्तामर और प्राणप्रिय काव्य (हिन्दी२०००)०)-

---

* आ निशानवाळां पुस्तको सीलकमां नथी.

जाणवायोग्य समाचार.

सौथी उत्तम केशर काश्मीरमां पाके छे अने एज केशर विलायती केशर करतां भाव, गुण अने शुद्धतामां चढतुं होय छे.

दरेक जैनने पवित्र केशर वापरवानो खप पडे छे जेथी दरेकने शुद्ध स्वदेशी केशर हर वखते मळी शके माटे, 'पवित्र काश्मीरी केशर' सुरतना दिगंबर जैन पुस्तकालयमांथी मात्र एक रुप्ये तोलाथी सर्वेने छुटक तथा जथाबंध पुरुं पाडवामां आवे छे.

समग्र जैनोमां मात्र "दिगंबर जैन" मासिकज एक एवुं पत्र छे के जे दर वर्षे चित्रविचित्र खास अंक तथा पंचांग उपरांत हिन्दी-गुजराती भाषानां अनेक पुस्तको भेट आपे छे, ज्यारे एनुं वार्षिक मूल्य मात्र रुप्या पोणाबेज छे.

गुजराती भाषामां घणजि सस्ती किंमते जैन पुस्तको मळी शके ते माटे सुरतमां 'सस्ती जैन ग्रंथमाळा' स्थपाई छे, जे दर वर्षे पोस्टेज साथे मात्र आठ आनामां ४०० पानानुं वांचन पुरुं पाडे छे.

सस्ती जैनग्रंथमाळा (सुरत)नो प्रथम मणको 'चेतन-कर्म-चरित्र जे २२६ पृष्ठनो छे, ते मात्र चार आनानी किंमते छुटक मळी शके छे.

Printed by
Matubhai Bhaidas at K. A's. the "Surat Jain" Printing Press, Khapatia Chakla-**Surat.**

Published by
MOOLCHAND KISANDAS KAPADIA.
Chandawadi—**Sruat.**